सोशल मीडिया से जुड़ें

Title Code : DELHIN28985.
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आप में कितनी भी प्रतिभा क्यों न हो, प्रयास और अभ्यास के बिना सब व्यर्थ है !

वर्ष 01, अंक 235, नई दिल्ली

सोमवार, 06 नवम्बर 2023, मूल्य ₹ 5, पेज 8

दिल्ली में सांस लेना मुश्किल: सरकार ने बुलाई अहम बैठक, वर्क फ्रॉम होम और सम-विषम की भी होगी वापसी !

संजय बाटला

सड़कों पर वाहनों की संख्या को कम करने के लिए एक बार फिर से ऑड-ईवन नियम लागू किया जा सकता है। इसके तहत दिन के आधार पर सम या विषम नंबर की गाड़ी चलेगी।

नई दिल्ली। दिल्ली में खतरनाक होते प्रदूषण स्तर को देखते हुए सोमवार से सरकारी व निजी कार्यालय में घर से काम करने की सुविधा दी जा सकती है। दिल्ली-एनसीआर के अधिकतर इलाकों में पिछले कुछ दिनों से प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में बना हुआ है। इसे देखते हुए रविवार को ग्रैप के चरण-चार को लागू कर दिया गया है। इसके तहत कार्य योजना रविवार से पूरे एनसीआर में तत्काल प्रभाव से लागू हो गई है। इसे लेकर सोमवार को दिल्ली सरकार ने सुबह उच्च स्तरीय बैठक बुलाई है। इस बैठक में आधे कर्मचारियों को घर से काम करने की अनुमति दी जा सकती है।

अधिकारियों ने बताया कि सोमवार को होने वाली बैठक में दिल्ली सरकार, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली छावनी व निजी कार्यालयों में कर्मचारियों की क्षमता को 50 फीसदी करने का निर्णय लिया जा सकता है। अन्य 50 फीसदी कर्मचारियों को घर से काम करने की अनुमति दी जा सकती है। इसके अलावा केंद्र सरकार को भी अपने कार्यालय में कर्मचारियों की संख्या आधा करने की सलाह दे सकती है। इसके अलावा कॉलेज, शैक्षणिक संस्थान को बंद करने, गैर-आपातकालीन वाणिज्यिक गतिविधियों को बंद करने की सलाह भी दे सकती है।

फिर लागू हो सकता है ऑड-ईवन नियम

सड़कों पर वाहनों की संख्या को कम करने के लिए एक बार फिर से ऑड-ईवन नियम लागू किया जा सकता है। इसके तहत दिन के आधार पर सम या विषम नंबर की गाड़ी चलेगी। इस फैसले के बाद सड़कों पर चारपहिया वाहनों की संख्या आधी रह जाएगी। इसके अलावा स्थानीय प्रदूषण कारणों को कम करने के लिए कई अन्य सख्त फैसले लिए जा सकते हैं।

होंगे यह बंद

दिल्ली में प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए डीजल के ट्रकों के प्रवेश को बंद किया जाएगा। इसमें आवश्यक वस्तुओं को ले जाने वाले, आवश्यक सेवाएं प्रदान करने वाले ट्रकों और सभी एलएनजी, सीएनजी, इलेक्ट्रिक ट्रकों राहत होगी। वहीं आवश्यक वस्तुएं को लाने-ले जाने वाले वाहनों को छोड़कर, ईवी/सीएनजी/बीएस-6 डीजल के अलावा दिल्ली के बाहर पंजीकृत एलसीवी को दिल्ली में प्रवेश अनुमति नहीं होगी। दिल्ली में पंजीकृत डीजल के मध्यम माल वाहन (एमजीवी) और भारी माल वाहन (एचजीवी) को भी अनुमति नहीं होगी। राजमार्ग, सड़क, फ्लाईओवर, ओवरब्रिज, पावर ट्रांसमिशन, पाइपलाइन सहित अन्य प्रमुख सार्वजनिक परियोजनाओं में भी सी एंड डी गतिविधियों पर प्रतिबंद हो सकता है।

दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से तीन भारत के, दिल्ली में हालात बेहद खराब

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली इन दिनों भारी वायु प्रदूषण से जूझ रही है और गैस चैंबर बनी हुई है। स्विस ग्रुप आईक्यू एयर ने एक डाटा जारी किया है, उसके मुताबिक दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में दिल्ली के साथ ही भारत के कोलकाता और मुंबई जैसे शहर भी शामिल हैं। नई दिल्ली इस सूची में शीर्ष पर है और यहां एक्यूआई सुबह साढ़े सात बजे 483 दर्ज किया गया। इसके बाद पाकिस्तान के लाहौर शहर का नंबर है, जहां सुबह एक्यूआई 371 दर्ज किया गया।

कोलकाता और मुंबई में एक्यूआई क्रमशः 206 और 162 रहा। आईक्यू एयर के डाटा के मुताबिक बांग्लादेश की राजधानी ढाका में एक्यूआई 189 रहा और पाकिस्तान के कराची में 162। चीन के शेनयांग शहर में सुबह एक्यूआई 159, होंगझू में भी 159, कुवैत में 155 और वुहान में 152 एक्यूआई रहा। दिल्ली में वायु प्रदूषण इतने खतरनाक स्तर पर पहुंच चुका है कि स्थानीय लोगों की आंखों में जलन और गले में परेशानी जैसी समस्याएं हो रही हैं। दिल्ली के कुछ इलाकों में एक्यूआई 500 के पार चला गया। बता दें कि 0-50 के बीच एक्यूआई को अच्छा माना जाता है। वहीं 400-500 के बीच का एक्यूआई सेहत के लिए काफी नुकसानदायक माना जाता है। जो लोग पहले से ही गंभीर बीमारी से जूझ रहे हैं, उनके लिए इतना प्रदूषण जानलेवा साबित हो सकता है। प्रदूषण को देखते हुए सरकार भी सक्रिय हो गई है और कंपनियों को उत्पादन रोकने के निर्देश दे दिए गए हैं। स्कूलों की छुट्टियां कर दी गई हैं। सभी निर्माण कार्य भी रोक दिए गए हैं और लोगों को सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करने की सलाह दी जा रही है। कई कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को घर से काम करने की छूट दे दी है। दिल्ली में क्रिकेट विश्वकप के सोमवार को होने वाले मैच को लेकर भी आशंका पैदा हो गई है।

दिल्ली-एनसीआर में लागू हुआ ग्रैप का चौथा चरण, अब लागू हुईं ये नई पाबंदियां

रविवार को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने तत्काल प्रभाव से पूरे एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) के चौथे चरण को लागू करने का निर्णय लिया है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। इन दिनों देश की राजधानी दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों में हवा जहर का रूप ले चुकी है। ऐसी आबोहवा में लोगों को सांस लेने में समस्या हो रही है। इस बीच लगातार बढ़ते प्रदूषण के मद्देनजर ग्रैप का चौथा चरण लागू कर दिया है। रविवार को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने तत्काल प्रभाव से पूरे एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) के चौथे चरण को लागू करने का निर्णय लिया। इसके अंतर्गत अब नई पाबंदियां लागू हो गई हैं। पहले, दूसरे और तीसरे चरण की पाबंदियां पहले की तरह लागू रहेंगी। अब दिल्ली और आसपास के जिलों में बीएस-6 को छोड़कर अन्य डीजल वाहनों के चलने पर रोक रहेगी

ग्रैप का चौथा चरण

दिल्ली के बाहर से आने वाले सभी ट्रकों को प्रवेश पर पाबंदी रहेगी। हालांकि, जरूरी सामान लाने वाले व सीएनजी और इलेक्ट्रिक ट्रकों पर पाबंदी से छूट दी गई है।

दिल्ली में पंजीकृत मध्यम व भारी डीजल संचालित माल वाहनों पर प्रतिबंध। जरूरी सामान वाले वाहनों को छूट मिलेगी।

एनसीटी दिल्ली व एनसीआर में डीजल चलित चार पहिया वाहनों पर रोक रहेगी। हालांकि, आपातकालीन वाहनों को छूट दी गई है। इस श्रेणी में केवल बीएस-6 वाहन चल सकते हैं।

एनसीआर में उद्योगों पर पाबंदी। जहां पीएनजी ईंधन की सुविधा नहीं है और सरकार द्वारा अधिकृत सूची से बाहर के ईंधन का उपयोग किया जा रहा है तो रोक लगेगी। हालांकि, दूध व डेयरी उत्पादों और मेडिकल उपकरणों से जुड़े उद्योगों को छूट दी जाएगी।

निर्माण व विध्वंस गतिविधियों पर रोक। इसके अलावा फ्लाईओवर, राजमार्ग, पुल व पाइपलाइन समेत अन्य गतिविधियों पर रोक।

केंद्र सरकार केंद्रीय कर्मचारियों को घरों से काम करने की छूट दे सकती है।

एनसीआर राज्य सरकारें सार्वजनिक, निगम और निजी दफ्तरों में 50 फीसदी क्षमता के साथ घरों से काम करने की छूट दे सकती है।

राज्य सरकारें स्कूल व कॉलेज को बंद करने के साथ गैर आपातकालीन वाणिज्यिक गतिविधियों को बंद कर सकती है।

आखिर ग्रैप होता क्या है?

पिछले कुछ वर्षों में देश की राजधानी दिल्ली अक्तूबर-नवंबर के महीनों में गैस चैंबर बनती रही है। इस समय पर हवा की गुणवत्ता बताने वाला वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 'खतरनाक' श्रेणी में बना रहता है जिससे लोगों के बीमार होने का भी खतरा बना रहता है। इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए 2 दिसंबर 2016 में एमसी मेहता बनाम भारत संघ के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। आदेश के अनुसार, विभिन्न वायु गुणवत्ता सूचकांक के तहत कार्यान्वयन के लिए ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान यानी ग्रैप तैयार किया गया है।

राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक में एक्यूआई की कई श्रेणियों में शामिल किया गया है जिसमें मध्यम और खराब, बहुत खराब और गंभीर शामिल हैं। 'गंभीर+ या आपातकालीन' की एक नई श्रेणी बाद में जोड़ी गई है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को पर्यावरण प्रदूषण (रोकथाम और नियंत्रण) प्राधिकरण के जरिए ग्रैप के कार्यान्वयन के लिए अधिसूचित किया गया है।

ग्रैप कार्य योजना में कितने चरण होते हैं?

-ग्रैप को दिल्ली एनसीआर में प्रतिकूल वायु गुणवत्ता के 4 विभिन्न चरणों के हिसाब से बांटा गया गया है। ग्रैप का चरण-I उस वक्त लागू होता है, जब दिल्ली में AQI का स्तर 201-300 के बीच होता है।

-ग्रैप का दूसरा चरण उस परिस्थिति में प्रभावी होता है, जब राजधानी में वायु गुणवत्ता सूचकांक 301-400 के बीच 'बहुत खराब' मापा जाता है। चरण II के तहत कार्रवाई एक्यूआई के 301-400 के अनुमानित स्तर तक पहुंचने से कम से कम तीन दिन पहले शुरू की जाती है।

-चरण III 'गंभीर' वायु गुणवत्ता के बीच लागू किया जाता है। इस वक्त दिल्ली में एक्यूआई 401-450 के बीच होता है। ग्रैप के चरण III के तहत कार्रवाई एक्यूआई के 400 से अधिक के अनुमानित स्तर तक पहुंचने से कम से कम तीन दिन पहले शुरू की जाती है।

-ग्रैप कार्य योजना का अंतिम और चरण IV 'गंभीर +' वायु गुणवत्ता की परिस्थिति में लागू किया जाता है। इस दौरान दिल्ली में AQI स्तर 450 से ज्यादा होना चाहिए। दूसरे और तीसरे चरण की तरह चरण IV के तहत कार्रवाई एक्यूआई के 450 के अनुमानित स्तर तक पहुंचने से कम से कम तीन दिन पहले ही शुरू की जाती है।

GOVT OF NCT OF DELHI: TRANSPORT DEPARTMENT
5/9 UNDER HILL ROAD, DELHI-110054

F.No.23 (1697)/CAP/TPT/PCD/2022/Pt. File
CD No. 075714609

Dated: - 05.11.2023

ORDER

Subject: - Implementation of Action under Stage – IV ('Severe+' air quality of revised GRAP in Delhi NCR steps to be taken

The Sub-Committee for operationalization of the revised GRAP has reviewed the air quality scenario as well as the forecasts for meteorological conditions and Air Quality Index in Delhi. The Sub-Committee vide order No.120017/27/GRAP/2021/CAQM dated 05.11.2023 has invoked all the actions as envisaged under **Stage – IV** of the GRAP – 'Severe+' Air Quality (Delhi AQI ranging **>450**), with immediate effect in the NCR, with immediate effect, in addition to all the actions under Stage – I, II and III of the GRAP.

As per directions as provided under Stage – IV of the revised GRAP and under Section 115 of Motor Vehicle Act, 1988, it is hereby ordered that there shall be the following restrictions on the vehicular movement:

1. No Entry for Truck traffic into Delhi (*Except for Trucks carrying essential commodities/ providing essential services and all LNG/CNG/ Electric Trucks*).
2. No Entry for LCVs Registered outside Delhi, other than EVs/ CNG/ BS- VI Diesel, to enter Delhi, except those carrying essential commodities/ providing essential services.
3. Ban on plying of Delhi- Registered Diesel operated Medium Goods Vehicles (MGVs) and Heavy Goods Vehicles (HGV) in Delhi, except those carrying essential commodities/providing essential services.

This direction shall not be applicable on vehicles carrying essential commodities i.e. raw vegetables, fruits, grains, milks, eggs, ice that is to be used as food items, and tankers carrying petroleum product.

This issue with the approval of the Competent Authority.

Spl Commissioner (PCD)

To:-

1. Spl. Commissioner, Delhi Traffic Police, Dev Prakash Shastri Marg, Delhi – 110012
2. Commissioner MCD, Dr S.P.M. Civic Center, Minto Road, New Delhi 110002
3. Nodal Officer (Traffic), Delhi Police
4. Dy. Commissioner (Enforcement), Transport Deptt., GNCTD
5. Sr. System Analyst, Transport Deptt., - *for uploading this order on the website of Transport Department.*

Copy for Information to :-

1. Secretary, Hon'ble Minister of Transport, GNCTD
2. PS to Pr. Secretary cum Commissioner, Transport Department, GNCTD
3. Director (Environment), Deptt. of Environment, Govt. of NCT of Delhi

Spl. Commissioner

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण रजिस्टर्ड

कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट

कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

आपका अपना ऑटो टैक्सी यूनियन की तरफ से ऑटो टैक्सी चालकों और पदाधिकारियों के साथ शुभ दीपावली की शुभकामनाएं दीं

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आपका अपना ऑटो टैक्सी यूनियन की तरफ से ऑटो टैक्सी चालकों और पदाधिकारियों के साथ शुभ दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं संगठन की तरफ से समस्त दिल्ली के ऑटो टैक्सी चालकों को दिया गया। बराखम्भा रोड कनॉट प्लेस साथ में उपस्थिति 150 चालकों को मीठा का डिब्बा और अपने घर पर दीप जलाने के लिये मोमबत्ती संगठन की तरफ से सभी चालकों भेंट स्वरूप दिया गया। सभी चालक दल अति उत्साह और खुशी पूर्वक दीपावली का त्योहार अपने घर पर मनाएं और सदा खुश रहें।

सभी चालकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय श्री राम

आपका साथी

सन्तोष पाण्डेय

रेगुलर ट्रेनें हुईं फुल, अब कई रूटों पर चलेगी गतिशक्ति सुपर फास्ट ट्रेन

दीपावली और छठ पर्व में शामिल होने के लिए हर साल दिल्ली से बड़ी संख्या में लोग पूर्वांचल की तरफ जाते हैं। इस भीड़ को देखते हुए रेलवे ने कई रूट पर स्पेशल ट्रेन चलाकर यात्रियों की राह आसान करने में जुटा है। भीड़ अधिक होने के चलते नियमित ट्रेनें पूरी तरह से फुल हैं।

हर साल की तरह इस साल भी पूर्वांचल दिशा की तरफ जाने वाली सभी नियमित ट्रेन अभी से ही फुल हो गई हैं। कई ट्रेनों में वेटिंग टिकट भी नहीं मिल रहा है। ऐसे में यात्रियों की परेशानी बढ़ गई है। आरक्षित बर्थ की चाहत को लेकर टिकट काउंटर से लोग निराश होकर लौट रहे हैं और किसी अन्य विकल्प का तालाश कर रहे हैं। खासकर दीपावली और छठ पर्व में शामिल होने के लिए हर साल दिल्ली से बड़ी संख्या में लोग पूर्वांचल की तरफ जाते हैं। इस भीड़ को देखते हुए रेलवे ने कई रूट पर स्पेशल ट्रेन चलाकर यात्रियों की राह आसान करने में जुटा हैं। नियमित ट्रेनों के फुल होने से रेलवे ने नई दिल्ली-पटना, नई दिल्ली से लखनऊ, वाराणसी के लिए गतिशक्ति स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। साथ ही जगाधरी, सहारनपुर, मुरादाबाद, बरेली, सीतापुर, गोंडा, गोरखपुर, सीवान, छपरा, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, बरौनी, बेगूसराय, खगड़िया और बख्तियारपुर रूट पर भी स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है। त्योहारों में उमड़ने वाली भीड़ को देखते हुए रेलवे ने नई दिल्ली-पटना के बीच 02246 /02245 गतिशक्ति स्पेशल सुपरफास्ट ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। ट्रेन संख्या 02246 नई दिल्ली-पटना जंक्शन आरक्षित सुपरफास्ट गतिशक्ति स्पेशल 10.11, 14, 15, 16 और नवंबर को देर रात 11:45 बजे चलेगी।

महिलाओं में चुपके से आती हैं ये 5 'साइलेंट किलर' बीमारियां, ध्यान नहीं दिया तो बन जाएगी बड़ा खतरा...

महिलाओं में भी कई बीमारियां 'साइलेंट किलर' होती हैं. ये बीमारियां शरीर में बढ़ती चली जाती हैं, लेकिन इनके लक्षण जल्दी दिखाई नहीं देते.

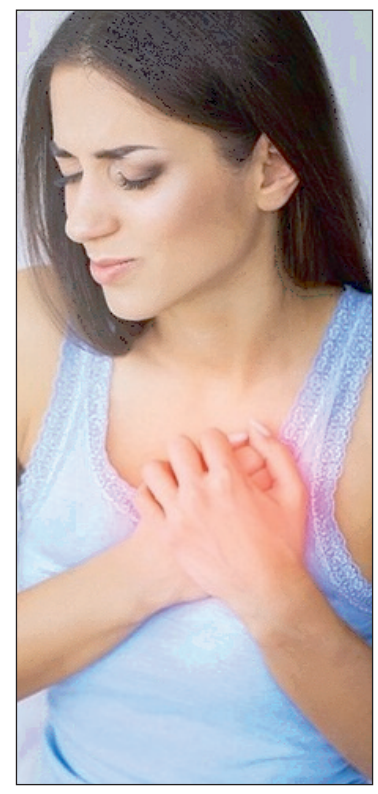

ज्यादातर बीमारियां ऐसी होती हैं जो किसी व्यक्ति के शरीर में बढ़ती चली जाती हैं और उसे इस बात की भनक तक नहीं लगने देतीं. न सिर्फ पुरुषों में बल्कि महिलाओं में भी कई खतरनाक बीमारियां चोरी-छिपे आती हैं. जब तक इनका पता चलता है, तब तक या तो बहुत देर हो चुकी होती है या इलाज करना असंभव हो जाता है. महिलाओं में भी कई बीमारियां 'साइलेंट किलर' होती हैं. ये बीमारियां शरीर में बढ़ती चली जाती हैं, लेकिन इनके लक्षण जल्दी दिखाई नहीं देते और अगर दिखते भी हैं तो इन्हें अक्सर सामान्य समस्या समझकर नजरअंदाज कर दिया जाता है.

आजकल के खराब खानपान और लाइफस्टाइल की वजह से ज्यादातर लोग किसी न किसी बीमारी का सामना कर रहे हैं. आइए जानते हैं कि महिलाओं में कौन-कौन सी बीमारियां 'साइलेंट किलर' होती हैं.

एनीमिया

एनीमिया एक कॉमन प्रॉब्लम है, जो ज्यादा किशोर लड़कियों में देखी जाती है. क्योंकि वे ज्यादातर ऐसे फूड आइटम्स खाती हैं, जिनसे शरीर को ठीक से पोषण नहीं मिल पाता. एनीमिया से बचने के लिए आयरन, विटामिन C और फोलेट से भरपूर भोजन का सेवन किया जाना चाहिए. आयरन से भरपूर आहार में बीन्स, हरी पत्तेदार सब्जियां, पोल्ट्री, ऑर्गन मीट और सूखे मेवे शामिल हैं. विटामिन C खट्टे फलों, पपीता, पालक और शिमला मिर्च में पाया जाता है. जबकि फोलेट साबुत अनाज, अंडे, मूंगफली, हरी पत्तियों और बीजों में मौजूद होता है.

पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (PCOS) या पॉलीसिस्टिक ओवरी डिजीज (PCOD)

इस बीमारी का पता आमतौर पर तब चलता है, जब कोई महिला गर्भवती होने की कोशिश कर रही होती है. ये एक हार्मोनल इंबैलेंस है, जिसका प्रभाव मेटाबोलिक हेल्थ पर पड़ता है. इसके सामान्य दुष्प्रभावों में मोटापा और इंसुलिन रेजिस्टेंस शामिल हैं. इस बीमारी में रिफाइंड कार्ब्स, चीनी से भरपूर भोजन और प्रोसेस्ड फूड से बचने की जरूरत होती है. साबुत अनाज और फलियां इंसुलिन रेजिस्टेंस में काफी मदद करती हैं.

मेनोपॉज

मेनोपॉज एक महत्वपूर्ण हार्मोनल चेंज है, जो सभी महिलाओं में होता है. इसमें फीमेल हार्मोन यानी एस्ट्रोजन कम हो जाता है. दिल की बीमारी के खिलाफ इसकी प्रोटेक्टिव एक्टविटी भी कम हो जाती है. यह समय नॉन कम्युनिकेबल डिजीज के बारे में जागरूकता बढ़ाने का आह्वान करता है.

दिल की बीमारी

मेनोपॉज के साथ लिपिड में बढ़ोतरी होती है और ब्लड वैसल्स की वॉल्स में बदलाव होता है. इसकी वजह से दिल की बीमारी का खतरा बढ़ जाता है. दिल से जुड़ी बीमारियों से बचाव के लिए साबुत अनाज, फलियां, ताजे फल और सब्जियां, मेवे और हेल्दी फैट का सेवन करना चाहिए. 30 से 40 मिनट की एक्सरसाइज के साथ लो-सेचुरेटेड फैट, लो-ट्रांस फैट और हाई फाइबर वाला भोजन खाना चाहिए. इससे हृदय रोग को रोकने में काफी मदद मिल सकती है.

बोन हेल्थ

महिलाओं में हड्डियों का स्वास्थ्य यानी बोन हेल्थ 30 के दशक में बिगड़ना शुरू हो जाता है. हड्डियों की मजबूती बनाए रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम के सेवन के साथ-साथ एक्सरसाइज करना जरूरी है. डेयरी प्रोडक्ट कैल्शियम का सबसे अच्छा सोर्स माने जाते हैं, जैसे दूध, दही या पनीर आदि. आप शाकाहारी सोया दूध भी चुन सकते हैं. ये शरीर को प्रोटीन और फास्फोरस प्रदान करते हैं, जिनसे हड्डियों के निर्माण में मदद मिलती है।

महिलाओं में ग़ैर-संक्रामक बीमारियों का बढ़ता प्रचलन!

रोकथाम, जल्दी पता लगाना और इलाज ग़ैर-संक्रामक बीमारियों से होने वाली मौतों में महत्वपूर्ण कमी लाने के लिए आवश्यक है.

ग़ैर-संक्रामक बीमारियां यानी (NCD) दुनिया भर में सालाना 4 करोड़ 10 लाख या कुल मौतों में से 74 प्रतिशत के लिए ज़िम्मेदार हैं. NCD से जुड़ी मौतों में से 77 प्रतिशत निम्न या मध्यम आमदनी वाले देशों में होती हैं. ग़ैर-संक्रामक बीमारियों से हर साल होने वाली आधी से ज़्यादा मौतें या 1 करोड़ 79 लाख मौतें दिल से जुड़ी बीमारियों से होती हैं. इसके बाद कैंसर (93 लाख), फेफड़े से जुड़ी बीमारी (41 लाख) और डायबिटीज़ (20 लाख मौतें जिनमें डायबिटीज़ की वजह से होने वाली किडनी की बीमारी से मौतें शामिल हैं) हैं. ग़ैर-संक्रामक बीमारियों से जुड़ी मौतों में से जो 80 प्रतिशत से ज़्यादा मौतें समय से पहले होती हैं वो इन चार तरह की बीमारियों के कारण होती हैं.

महिलाएं एवं लड़कियां विशेष रूप से जोख़िम का सामना कर रही हैं क्योंकि मरने वाली हर तीन महिलाओं और लड़कियों में से क़रीब-क़रीब दो की मौत NCD से होती है. इसका मतलब है कि हर साल 1 करोड़ 68 लाख महिलाओं की मृत्यु गैर-संक्रामक रोगों से होती है.

महिलाएं एवं लड़कियां विशेष रूप से जोख़िम का सामना कर रही हैं क्योंकि मरने वाली हर तीन महिलाओं और लड़कियों में से क़रीब-क़रीब दो की मौत NCD से होती है. इसका मतलब है कि हर साल 1 करोड़ 68 लाख महिलाओं की मृत्यु गैर-संक्रामक रोगों से होती है. पिछले तीन दशकों के दौरान निम्न और मध्यम आमदनी वाले देशों में महिलाओं की सेहत से जुड़ी समस्याओं में काफ़ी बदलाव आ चुका है. NCD, जिन्हें पहले अमीरों की बीमारी माना जाता था, अब विकासशील और विकसित-दोनों प्रकार के देशों में महिलाओं के बीच मौत और विकलांगता का सबसे बड़ा कारण है. लैंसेट के मुताबिक़, जिन 186 देशों और क्षेत्रों में अध्ययन किया गया है उनमें से 164 (88 प्रतिशत) में महिलाओं और 165 (89 प्रतिशत) में पुरुषों के 70 वर्ष से कम उम्र में संक्रामक, मां से जुड़ी, नवजात और पोषण संबंधी बीमारियों को मिलाकर होने वाली कुल मौतों के मुक़ाबले NCD से मरने की ज़्यादा आशंका है.

आंकड़ा 1: अलग-अलग उम्र और लिंग के अनुसार विश्व में ग़ैर-संक्रामक बीमारियों का बोझ

उपर्युक्त आंकड़े से पता चलता है कि पुरुषों के मुक़ाबले महिलाओं में ग़ैर-संक्रामक बीमारियां होने की आशंका ज़्यादा है और जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती जाती है, उनकी सेहत में गिरावट आती है. हर साल महिलाओं की कुल मौत में अकेले दिल से जुड़ी बीमारियों का योगदान 35 प्रतिशत (तीन में से एक मौत) है लेकिन इसके बावजूद इनका ठीक से निदान या उपचार नहीं होता है. एक अनुमान के मुताबिक़ 2045 तक 2017 के मुक़ाबले 20 से 79 साल की उम्र की 30 करोड़ 80 लाख ज़्यादा महिलाओं को डायबिटीज़ होगा. ये बीमारियां महिलाओं और लड़कियों के बीच तीन में से दो मौतों के लिए ज़िम्मेदार होंगी और उनमें मृत्यु और अपंगता का मुख्य कारण हैं.

महिलाएं एवं लड़कियां, विशेष रूप से निम्न और मध्य आमदनी वाले देशों में रहने वाली, अक्सर संक्रामक और ग़ैर-संक्रामक बीमारियों के साथ-साथ प्रजनन से जुड़े स्वास्थ्य की समस्याओं के तिगुने बोझ का अनुभव करती हैं. NCD की वजह से ख़राब सेहत और मृत्यु समाज में महिलाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति को जोख़िम में डालती हैं और जीवन भर उनके स्वास्थ्य एवं विकास को प्रभावित करती हैं. महिलाएं एवं लड़कियां को डिप्रेशन और पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर होने का ख़तरा ज़्यादा है और इन दोनों ही बीमारियों का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालीन नकारात्मक असर पड़ता है.

महिलाओं एवं लड़कियों की केवल व्यक्तिगत सेहत के आगे भी इन बीमारियों का उनके ऊपर काफ़ी असर होता है. मौजूदा समय में मानव जनसंख्या में महामारी विज्ञान से जुड़ी रिसर्च और आनुवंशिक बदलाव की प्रक्रिया की बेहतरीन जानकारी से पता चलता है कि जन्म से पहले की घटनाएं डायबिटीज़ और दूसरी ग़ैर-संक्रामक बीमारियों के विकसित होने में योगदान कर सकती हैं. कुपोषण, देर से शारीरिक एवं मानसिक विकास और वयस्क होने पर ग़ैर-संक्रामक बीमारियां, जिनमें डायबिटीज़ और दिल से जुड़े रोग शामिल हैं, कुपोषित मां के गर्भ से पैदा होने से जुड़े जोख़िम हैं. बदनामी और सामाजिक नियमों के कारण अक्सर तंबाकू खाने, हानिकारक शराब पीने, ख़राब भोजन, शारीरिक रूप से निष्क्रियता और अंदरुनी एवं आस-पास के प्रदूषण से जोख़िम पुरुषों एवं लड़कों के मुक़ाबले महिलाओं एवं लड़कियों में अलग होता है. दुनिया में लगभग 37 प्रतिशत वयस्क पुरुष एवं 9 प्रतिशत वयस्क महिलाएं धूम्रपान करती हैं.

मज़बूत स्वास्थ्य नीति

पुरुषों एवं महिलाओं के बीच NCD से जुड़े जोख़िम अलग-अलग होते हैं. ज़्यादा वज़न या मोटापा स्वास्थ्य से जुड़ी एक गंभीर चिंता है और ये कई तरह के ग़ैर-संक्रामक रोगों से जुड़ा है. बीमारी, अपंगता और मौत का ज़्यादा जोख़िम इसके साथ जुड़ा है. कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों में बढ़ोतरी, जैसे कि कोरोनरी हार्ट बीमारी, हाइपरटेंशन, स्ट्रोक, टाइप-2 डायबिटीज़ और कई तरह के कैंसर, जिनमें मासिक धर्म समाप्त होने के बाद महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर, गर्भाशय का कैंसर, कोलन एवं किडनी का कैंसर शामिल हैं, मौत के लिए बड़े जोख़िम के कारक हैं. मोटापा और शारीरिक निष्क्रियता जैसे जोख़िमों के कारण सामान्य रूप से पुरुषों के मुक़ाबले महिलाओं को NCD से जुड़ा ख़तरा ज़्यादा है. इसकी वजह ये है कि मोटापा और शारीरिक निष्क्रियता पुरुषों की तुलना में महिलाओं में आम तौर पर ज़्यादा देखी जाती हैं.

NCD के कारण स्वास्थ्य देखभाल की लागत में बढ़ोतरी होती है, उत्पादकता को नुक़सान होता है और बेतहाशा खर्च होता है. दुनिया भर में महिलाओं के बीच ग़रीबी ज़्यादा है और वो NCD का इलाज कराने में सक्षम नहीं होती हैं.

महिलाओं की सेहत का असर उनके बच्चों की सेहत पर भी पड़ता है. कुपोषित मां से पैदा बच्चों में कुपोषण, जन्म के समय कम वज़न और बड़े होने पर NCD के प्रति ज़्यादा संवेदनशीलता का जोख़िम होता है. इसलिए मां की बेहतर सेहत भविष्य की पीढ़ी के लिए भी महत्वपूर्ण है.

NCD को सतत विकास के लिए 2030 के एजेंडा में महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य की चिंता के रूप में स्वीकार किया जाता है. सतत विकास लक्ष्य (SDG) 3 के टारगेट 3.4 में 2030 तक NCD से जुड़ी मौतों की संख्या में एक-तिहाई कमी का आह्वान किया गया है. 2015 के स्तर की तुलना में 30 और 70 साल की उम्र के बीच कैंसर, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों, सांस की बीमारियों और डायबिटीज़ से मरने की आशंका में एक-तिहाई कमी के साथ SDG 3 के टारगेट 3.4 को 35 देशों (19 प्रतिशत महिलाओं और 16 प्रतिशत पुरुषों) में पूरा कर लिया जाएगा।

सर्वाइकल कैंसर: भारतीय महिलाओं को होने वाला दूसरा बड़ा कैंसर

राजधानी दिल्ली से सटे नोएडा ज़िले में रहने वाली अंजू शर्मा (बदला हुआ नाम) जब अपने पति से संबंध बनाती तो उन्हें कभी कभार हल्की ब्लीडिंग होने लगती थी.

38 साल की अंजू बीबीसी से बातचीत में कहती हैं, "ऐसा नहीं था कि हर बार संबंध बनाते वक्त ब्लीडिंग होती थी लेकिन एक दो महीने में हल्का सा ख़ून दिखाई देता था. मुझे लगता था शायद संबंध बनाने से हुआ होगा या महीना आने वाला होगा. मैंने आयुर्वेद की दवा खाई लेकिन कुछ असर नहीं हुआ."

वो आगे बताती हैं कि साल 2020 से उन्हें स्वास्थ्य से संबंधित ये शिकायत हो रही थी. साल बीता और इत्तेफ़ाक़ ही था कि महिला दिवस के दिन यानी आठ मार्च उनके घर के पास सरकारी मेडिकल कैंप लगा हुआ था.

ब्रेस्ट कैंसर की चपेट में कम उम्र की लड़कियां भी क्यों आ रही हैं?

क्या प्लास्टिक बोतलों का पानी पीने से हो सकता है कैंसर?

अंजू वहां पहुंची और वहां मौजूद डॉक्टर ने उनकी जांच की. डॉक्टरों ने उनके सैंपल भी लिए. तीन दिन बाद नोएडा के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ कैंसर प्रिवेंशन एंड रिसर्च (एनआईसीपीआर) से उन्हें फ़ोन आया.

उनके अनुसार, "अस्पताल से फ़ोन आया तो मैं डर गई और मैंने पूछा कि कोई बड़ी बात है? उनका कहना था कोई बड़ी बात नहीं है, आपको सर्वाइकल कैंसर हो सकता है तो आप एक बार आकर फिर से जांच करवाएं."

'पता चला सर्वाइकल कैंसर है'

अंजू बताती हैं कि उनका पेपस्मीयर टेस्ट किया गया और उन्हें पता चला कि उनका सर्वाइकल कैंसर है जो अभी पहले स्टेज में है.

अंजू की दो सर्जरी हो चुकी हैं और उनकी बच्चेदानी निकाली जा चुकी है. डॉक्टरों का कहना है वे ठीक हो चुकी हैं लेकिन उन्हें हर तीन महीने में पेपस्मीयर की नियमित जांच करवानी होगी.

सर्वाइकल कैंसर का नाम अंजू ने कभी नहीं सुना था लेकिन वे मानती हैं कि उन्हें इस बीमारी के बारे में समय रहते पता चल गया.

डॉ स्वस्ति के अनुसार उनके पास 50 साल के ऊपर की ऐसी कई महिलाएं आती हैं जो ब्लीडिंग, ब्रेस्ट से डिस्चार्ज यानी स्तन से पानी निकलने या सफ़ेद पानी (व्हाइट डिस्चार्ज) जैसी दिक्कतों को किसी से साझा नहीं करतीं. वे सालों तक इस समस्याओं के प्रति लापरवाह रहती हैं या शर्म के मारे नहीं बताती है. जब समस्या बढ़ जाती है तब वे डॉक्टर के पास आती हैं और उसका नतीजा ये होता है कि उनका कैंसर एडवांस स्टेज पर पहुंच जाता है.

एडवांस स्टेज में आती हैं महिलाएं

डॉक्टर स्वस्ति, एक निजी अस्पताल, मैक्स सुपर स्पेशलिटी में स्त्री और कैंसर रोग विशेषज्ञ हैं.

डॉ. स्वस्ति कहती हैं, "भारत की महिलाओं में सबसे ज्यादा ब्रेस्ट कैंसर के मामले पाए जाए हैं और सर्विक्स या गर्भाशयग्रीवा में होने वाला ये सर्वाइकल कैंसर दूसरे स्थान पर है और इस बीमारी से पीड़ित अधिकतर महिलाएं एडवांस स्टेज में डॉक्टर के पास आती हैं ऐसे में सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मौत का आंकड़ा भी बढ़ जाता है.

डॉ सरिता श्यामसुंदर कई सालों से सर्वाइकल कैंसर पर काम कर रही हैं

यौन संबंध से फैलता है वाइरस

डॉक्टर सरिता श्यामसुंदर दिल्ली स्थित वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज में स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं और सर्वाइकल कैंसर पर काम कर रही हैं.

वे बताती हैं कि भारत में एक लाख महिलाओं में से 20 महिलाओं में इस कैंसर के मामले सामने आते हैं.

डॉक्टर सरिता कहती हैं, "इस कैंसर का कारण वायरस होता है जिसे ह्यूमन पेपिलोमा वायरस कहते हैं जो यौन संबंधों के कारण शरीर में प्रवेश करता है. और अगर बार-बार कोई इस वायरस से संक्रमित होता है तो बाद में जाकर ये सर्वाइकल कैंसर का रूप ले लेता है."

विश्व स्वास्थ्य संगठन या डब्लयूएचओ के मुताबिक सर्वाइकल कैंसर के 95 फ़ीसद से ज्यादा मामलों का कारण ह्यूमन पेपिलोमा वायरस या एचपीवी होता है.

एचपीवी वायरस ज्यादातर यौन संबंध बनाने पर फैलता है और ज्यादातर मामलों में लोग यौन क्रियाओं की शुरुआत होने के बाद ही इससे संक्रमित हो जाते हैं. वहीं 90 फ़ीसद से ज्यादा में संक्रमण अपने आप ख़त्म भी हो जाता है.

डब्लयूएचओ के मुताबिक एक महिला के शरीर में अगर सामान्य प्रतिरोधक क्षमता है उसमें सर्वाइकल कैंसर को विकसित होने में 15 से 20 साल लगते हैं. और अगर किसी महिला की प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर है जैसे किसी एचआईवी संक्रमित महिला का इलाज नहीं हुआ है तो इस कैंसर को ऐसी महिला में विकसित होने में पांच से दस साल का समय लगता है. वहीं टीबी जैसी बीमारी से कोई महिला पीड़ित है, तो उसे भी ये कम समय में हो सकता है.

भारत में महिलाओं में सबसे ज्यादा ब्रेस्ट कैंसर के मामले सामने आते हैं.

डॉ स्वस्ति सर्वाइकल कैंसर पर ग्लोबोकेन द्वारा जारी किए गए आंकड़ों का हवाला देते हुए कहती हैं कि साल 2018 में पूरे भारत से एक साल में सर्वाइकल कैंसर के एक लाख मामले सामने आए और 60-62 हज़ार महिलाओं की मौत हुई थी.

ग्लोबोकेन दरअसल दुनियाभर में कैंसर के मामलों और उससे होने वाली मौतों के आंकड़े रखता है.

वे बीबीसी से बताती हैं कि उनके पास एक महीने में पांच से सात मामले सर्वाइकल कैंसर के आते हैं. इसमें से ज्यादातर महिलाओं की उम्र 45-50 साल से ऊपर होती है.

काली महिलाओं में स्तन कैंसर अधिक, क्यों?

जानलेवा नहीं है स्तन कैंसर

पुरुषों को भी हो सकता है

वहीं डॉ. सरिता श्यामसुंदर के अनुसार उनके विभाग की हर ओपीडी में रोज़ दो या तीन ऐसे मरीज़ आते हैं जिनमें वो महिलाएं होती हैं जिन्हें एडवांस स्टेज का कैंसर होता है.

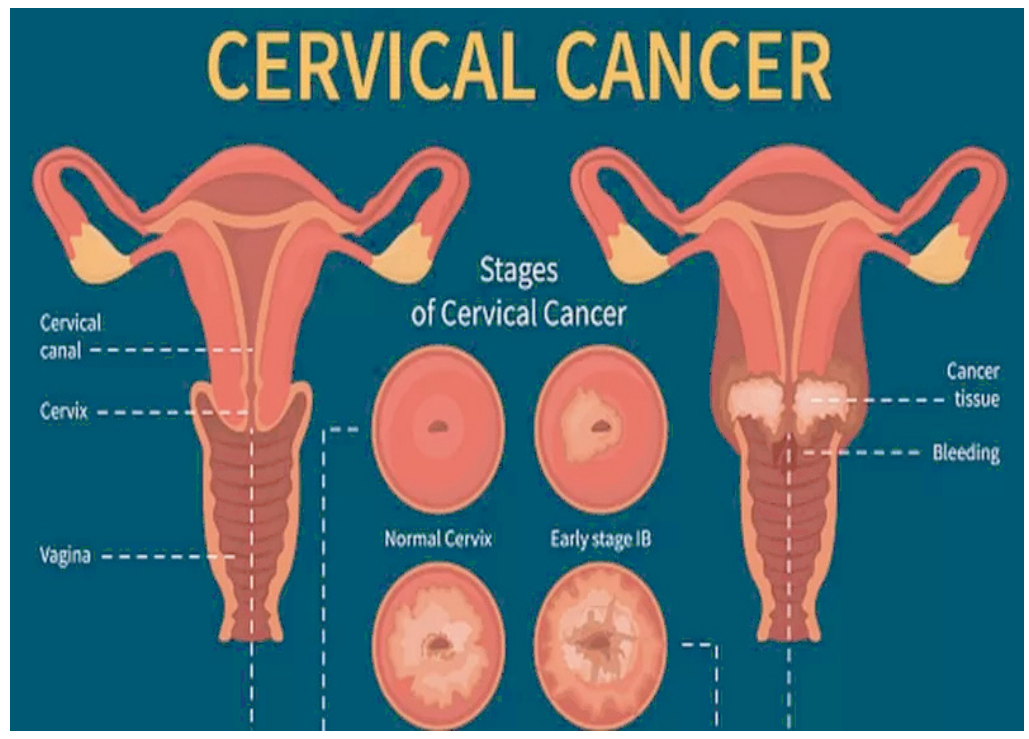

वो बताती हैं कि ये महिलाएं सर्वाइकल कैंसर से पीड़ित होती हैं और ये सामान्य इन्फेक्शन समझ कर उनकी दवाएं लेती हैं और जांच नहीं करवाती हैं.

डॉक्टर ये भी कहती हैं कि महिलाएं ये सोचने लगती हैं कि उन्हें मेनोपॉज़ हो गया है तो अब सर्वाइकल कैंसर नहीं हो सकता है ये ग़लत धारणा है.

साथ ही डॉक्टरों का कहना है क्योंकि ये एचपीवी वाइरस से होने वाला कैंसर है इसलिए पुरुषों में भी पीनाइल कैंसर, ओरल कैंसर या जननांग में मस्से होना इसके संकेत हो सकते हैं.

महिलाओं में ये ओरल कैंसर या वजाइनल कैंसर की शक्ल में भी हो सकता है और उन्हें भी जननांग में मस्से आ सकते हैं.

विश्व स्वास्थ्य संगठन या डब्लयूएचओ के अनुसार सर्वाइकल कैंसर विश्व में महिलाओं में होने वाला चौथा आम कैंसर है और आकलन के मुताबिक साल 2020 में इस कैंसर के 6,04,000 नए मामले सामने आए थे और इससे 3,42,000 महिलाओं की मौत हुई थी.

संस्था के मुताबिक 90 फ़ीसद नए मामले और मौत मध्यमवर्गीय आमदनी वाले देशों में दर्ज की गई.

डब्लयूएचओ के अनुसार जिस महिला को एचआईवी नहीं है, उसकी तुलना में एचआईवी से पीड़ित महिला को सर्वाइकल कैंसर होने की आशंका छह गुना बढ़ जाती है.

सर्वाइकल कैंसर के लक्षण

शुरुआत में कोई लक्षण नहीं होते लेकिन अगर लक्षण दिखते हैं तो इन्हें नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए. प्रमुख लक्षणः-

और अगर सर्वाइकल कैंसर एडवांस स्टेज पर पहुंचता है तो ज्यादा गंभीर लक्षण दिखाई देने लगते हैं जैसे लगातार कमर, पैरों या पेल्विक (पेड़ू) में दर्द

वज़न कम होना, थकान और भूख ना लगना

बदबूदार सफेद पानी आना और वजाइना में असहज महसूस करना

पैरों में सूजन

हड्डियों में दर्द

सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम

साल 2008 में एचपीवी वैक्सीन को स्वीकृति मिली थी लेकिन इसे राष्ट्रीय टीकाकरण अभियान का हिस्सा नहीं बनाया गया है. ऐसे में इसकी कीमत के कारण भी ये वैक्सीन या टीका लड़कियों की एक बड़ी आबादी की पहुंच से दूर है.

हालांकि कुछ राज्यों जैसे दिल्ली, सिक्किम और पंजाब में सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत स्कूल जाने वाली लड़कियों को एचपीवी के टीके देने का प्रावधान शुरू किया गया है.

डॉ स्वस्ति और सरिता कहती हैं, "ये टीका भारत में अभी 9 से 26 साल की लड़कियों के लिए है और इससे कैंसर से 70 फ़ीसद रोकथाम हो सकती है. लेकिन बचा हुआ 30 प्रतिशत कैसे पूरा होगा इसके लिए हर पांच साल में स्क्रीनिंग होनी चाहिए."

कोरोना और ब्रेस्ट कैंसरः तकलीफ़ भी, उम्मीद भी

नींबू से समझिए स्तन कैंसर की निशानियां

अगर लड़की नौ से 15 साल की है तो उसे एचपीवी के दो टीके दिए जाएंगे और 15 साल के बाद टीका लगता है तो लड़की को टीके के तीन डोज लगेंगे. ये टीके एक नियमित अंतराल पर दिए जाएंगे.

डॉक्टर स्वस्ति के अनुसार, "11-13 साल में सेक्शुएल एक्टिवीटी शुरू नहीं हुई होती है. साथ ही इस उम्र में रोग प्रतिरोधक क्षमता या इम्यूनीटि सिस्टम विकसित हो रहा होता है तो इससे एंटीबॉडी और मजबूत हो जाती हैं. और ये टीका लड़कों को भी दिया जाना चाहिए."

हर महिला को हर पांच साल में पेपस्मीयर और एचपीवी टेस्ट करवाना चाहिए. अगर किसी महिला की सेक्शुएल एक्टिविटी शुरू हो जाती है तो ऐसे में उन्हें इस एक्टिवीटी के दो साल बाद ये जांच करवाना शुरू कर देना चाहिए चाहे वो शादीशुदा हो या न हो.

एक मेडिकल वेबसाइट बॉयो मेड सेंट्रल या बीएमसी के अनुसार अनुसार कई देशों कनाडा, यूके, आयरलैंड, इटली और फ्रांस कुछ ऐसे देश हैं जहां सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं हर तीन साल में 25-65 उम्र की सेक्शुएली एक्टिव महिलाओं में पेपस्मीयर टेस्ट की सिफारिश करते हैं. इस वेबसाइट पर मेडिकल, विज्ञान या तकनीक के क्षेत्र में हुए शोध प्रकाशित किए जाते हैं.

डॉक्टर मानते हैं कि अगर अर्ली स्टेज या शुरुआती चरण में ही कैंसर का पता चल जाता है तो कैंसर पूरी तरह से ठीक हो सकता है और इसमें 95 से 97 प्रतिशत सर्वाइवल रेट यानी जीवित रह सकने की दर होती है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन जहां सर्वाइकल कैंसर को ख़त्म करने और जागरूकता लाने की दिशा में काम कर रहा है.

वहीं डॉक्टर सरिता भी मानती हैं कि लोगों में सर्कवाइल कैंसर के प्रति जागरूकता आ रही है. और प्राथमिक केंद्रों में भी इसकी जाँच शुरू हो गई है.

डॉक्टरों का कहना है कि अगर जांच समय पर होती रहे और लड़कियों का टीकाकरण समय से हो तो इस कैंसर से शत प्रतिशत बचा जा सकता है।

दिल्ली में प्राइमरी स्कूल 10 नवंबर तक बंद, कक्षा 6 से 12वीं तक की ऑनलाइन होगी पढ़ाई

दिल्ली में लगातार चौथे दिन रविवार को हवा की गुणवत्ता 'गंभीर' श्रेणी में रही, हालांकि समग्र वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में मामूली गिरावट के साथ शनिवार को 504 के मुकाबले 410 दर्ज की गई।

नईदिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है। ऐसे में दिल्ली में प्राइमरी स्कूलों को 10 नवंबर तक बंद करने का फैसला लिया गया है। दिल्ली में पांचवीं तक के सभी स्कूल बंद रहेंगे। दिल्ली सरकार ने बढ़ते प्रदूषण को लेकर निर्णय लिया है।

दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी ने एक्स पर लिखा कि 'चूंकि प्रदूषण का स्तर लगातार ऊंचा बना हुआ है, इसलिए दिल्ली में प्राथमिक स्कूल 10 नवंबर तक बंद रहेंगे। ग्रेड 6-12 के लिए स्कूलों को ऑनलाइन कक्षाओं में शिफ्ट होने का विकल्प दिया गया है'

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा, ₹केंद्र सरकार के आकड़े बताते हैं कि पंजाब में पराली पिछले साल से कम जलाई गई है। पंजाब के पराली के धुएं का दिल्ली पर उतना असर नहीं है, जितना हरियाणा और उत्तर प्रदेश का है क्योंकि हवा में गति ही नहीं है। हवा चलेगी तभी तो पंजाब का धुंआ दिल्ली तक आएगा। अभी दिल्ली में चारों ओर का धुआं आया है। हरियाणा और उत्तर प्रदेश की पराली का धुआं दिल्ली पहुंच रहा है।

सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी फोरकास्टिंग के अनुसार, लगातार चौथे दिन रविवार को दिल्ली में हवा की गुणवत्ता 'गंभीर' श्रेणी में रही, हालांकि समग्र वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में मामूली गिरावट के साथ शनिवार को 504 के मुकाबले 410 दर्ज की गई। सफर इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, लोधी रोड क्षेत्र में वायु गुणवत्ता 385 (बहुत खराब) दर्ज की गई, जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय क्षेत्र में 456 (गंभीर) है। कालिंदी कुंज क्षेत्र से एएनआई ड्रोन कैमरा फुटेज में हवा में धुंध की एक मोटी परत दिखाई दी। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, रविवा सुबह दिल्ली के आया नगर में एक्यूआई 464, द्वारका सेक्टर-8 में 486, जहांगीरपुरी में 463 और आईजीआई एयरपोर्ट (टी3) के आसपास एक्यूआई 480 दर्ज किया गया है।

महिला को नोचता रहा पिटबुल... देखता रहा पड़ोसी मालिक और उसका परिवार, दिल्ली में दिल दहलाने वाली वारदात

दिल्ली के स्वरूप नगर थाना इलाके की गली नंबर 14 में पिटबुल डॉग ने महिला पर हमला कर दिया। पिटबुल के काटे जाने से महिला घायल हो गई। घायल की पहचान रिया देवी के रूप में हुई है।

देश की राजधानी दिल्ली में कुत्तों के हमले करने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। ताजा मामला दिल्ली के स्वरूप नगर थाना इलाके की गली नंबर 14 का है। रहने वाली एक महिला पर पड़ोसी के पिटबुल डॉग ने हमला कर दिया। महिला को कई जगह काटा।

पिटबुल डॉग के काटे जाने से घायल हुई महिला की पहचान रिया देवी के रूप में हुई है। पिटबुल ने रिया को कई जगह काटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया है। महिला का आरोप है कि पिटबुल डॉग हर रोज उनके दरवाजे पर ही शौच करता है। जिससे घर के सामने गंदगी फैल जाती है।

इस बात को लेकर वह काफी परेशान थीं। पुलिस को दिए गए बयान के मुताबिक, महिला ने यह आरोप लगाया कि बीते शुक्रवार की सुबह (3 नवंबर) रिया के घर के आगे पिटबुल डॉग को उसका मालिक शौच कराने लगा।

रिया देवी ने अपने सीसीटीवी में पिटबुल को शौच करवाते हुए देखा तो इसका उन्होंने विरोध किया। उन्होंने पड़ोसी से कहा कि पिटबुल को मेरे घर के आगे शौच न कराएं। यह बात पड़ोसी को बुरी लगी। उसने महिला के साथ झगड़ा किया।

महिला का आरोप है कि इसके बाद पड़ोसी ने महिला को डराने के लिए पिटबुल डॉग को महिला के उपर ही छोड़ दिया। इसके बाद पीड़ति महिला रिया के शरीर पर पिटबुल डॉग ने करीब पांच जगह पर काटा। पीड़ित महिला ने पड़ोसी के खिलाफ केस दर्ज कराया है।

दिल्ली में दमघोंटू जहरीली हवा का कहर, लोगों को सांस लेने में हो रही परेशानी; जानिए कितना है AQI

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, दिल्ली भर में वायु गुणवत्ता 'गंभीर' श्रेणी में बनी हुई है। आया नगर में एक्यूआई 464, द्वारका सेक्टर-8 में 486, जहांगीरपुरी में 463 और आईजीआई एयरपोर्ट (टी3) के आसपास एक्यूआई 480 दर्ज किया गया है।

देश की राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण के कारण लोगों का बुरा हाल है। चारों तरफ कोहरे की तरह नजर आने वाला स्मॉग छाया हुआ है। जिस वजह से लोगों को सांस लेने में परेशानी हो रही है। सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी फोरकास्टिंग के अनुसार, लगातार चौथे दिन रविवार को दिल्ली में हवा की गुणवत्ता 'गंभीर' श्रेणी में रही, हालांकि समग्र वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में मामूली गिरावट के साथ शनिवार को 504 के मुकाबले 410 दर्ज की गई। सफर इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, लोधी रोड क्षेत्र में वायु गुणवत्ता 385 (बहुत खराब) दर्ज की गई, जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय क्षेत्र में 456 (गंभीर) है। कालिंदी कुंज क्षेत्र से एएनआई ड्रोन कैमरा फुटेज में हवा में धुंध की एक मोटी परत दिखाई दी।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, दिल्ली भर में वायु गुणवत्ता 'गंभीर' श्रेणी में बनी हुई है। रविवार सुबह आया नगर में एक्यूआई 464, द्वारका सेक्टर-8 में 486, जहांगीरपुरी में 463 और आईजीआई एयरपोर्ट (टी3) के आसपास एक्यूआई 480 दर्ज किया गया। प्रदूषण को कम करने के लिए एनडीएमसी सिविक सेंटर के आसपास पानी का छिड़काव किया जा रहा है।

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा, ₹केंद्र सरकार के आकड़े बताते हैं कि पंजाब में पराली पिछले साल से कम जलाई गई है। पंजाब के पराली के धुएं का दिल्ली पर उतना असर नहीं है, जितना हरियाणा और उत्तर प्रदेश का है क्योंकि हवा में गति ही नहीं है। हवा चलेगी तभी तो पंजाब का धुंआ दिल्ली तक आएगा। अभी दिल्ली में चारों ओर का धुआं आया है। हरियाणा और उत्तर प्रदेश की पराली का धुआं दिल्ली पहुंच रहा है।

मौसमी बदलाव से जल्दी आया स्मॉग का दौर

हवाओं के रुख व रफ्तार और तापमान के मिले-जुले असर से स्मॉग का दौर भी जल्दी आ रहा है। 1970 से 1993-94 तक नवंबर मध्य में दिखने वाली स्मॉग की चादर 1995 के बाद से अक्तूबर से ही दिखने लगी। नवंबर शुरू होते ही हालात गंभीर हो गए हैं। स्मॉग की मोटी परत के कारण कई लोगों को सांस संबंधित व स्वास्थ्य से जुड़ी अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है

दिल्ली और एनसीआर की हवाओं के बड़े खलनायक भौगोलिक स्थिति

दिल्ली हर तरफ से जमीन से घिरी है। हवाओं के मामले में इसकी स्थिति कीप जैसी है। पड़ोसी राज्यों की मौसमी हलचल का सीधा असर दिल्ली-एनसीआर में पड़ता है। चारों तरफ से आने वाली हवाएं कीप सरीखे दिल्ली-एनसीआर में फंस जाती हैं। नतीजा गंभीर स्तर के प्रदूषण के तौर पर दिखता है।

मिक्सिंग हाइट व वेंटिलेशन इंडेक्स में गिरावट

सर्दी में मिक्सिंग हाइट (जमीन की सतह से वह ऊंचाई, जहां तक आबोहवा का विस्तार होता है) कम होती है। गर्मियों के औसत चार किमी के विपरीत सर्दियों में यह एक किमी से भी कम रहता है। वहीं, वेंटिलेशन इंडेक्स (मिक्सिंग हाइट और हवा की चाल का अनुपात) भी संकरा हो जाता है। इससे प्रदूषक ऊंचाई के साथ क्षैतिज दिशा में भी दूर-दूर तक नहीं फैल पाते। पूरा इलाका ऐसे हो जाता है, जैसे कंबल से उसे ढंक दिया गया हो। शनिवार को हवा की मिक्सिंग हाइट 3000 मीटर रही। जबकि वेंटिलेशन इंडेक्स 9000 वर्ग मीटर प्रति सेकेंड रहा।

दिल्ली में पटाखा बना रहे दो युवकों की धमाके में मौत, कमरे में मिला पोटाश और गंधक

छानबीन के दौरान पुलिस ने क्राइम और फोरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया। टीम ने छानबीन करने के बाद कमरे से कई साक्ष्य हासिल किए। छानबीन के दौरान पुलिस ने बताया कि कमरे से पोटाश और गंधक मिला है। आशंका है कि गौरव और साहिल कमरे में गंधक और पोटाश को मिलाकर पटककर फोड़ने वाला पटाखा बना रहे थे।

दिल्ली के नरेला औद्योगिक क्षेत्र इलाके में शनिवार रात पटाखे बनाने के दौरान एक कमरे में विस्फोट होने से दो युवकों की मौत हो गई। कमरे से धुआं निकलता देख परिवार के सदस्य वहां पहुंचे और झुलसे दोनों युवकों को बाहर निकालकर पास के अस्पताल ले गए। जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने दावा किया है कि छानबीन के दौरान कमरे से गंधक और पोटाश मिला है। आशंका है कि दोनों युवक इनको मिलाकर छोटे पटाखे बना रहे थे। इसी दौरान धमाका हो गया। पुलिस ने लापरवाही से मौत का मामला दर्ज कर लिया है और मामले की छानबीन कर रही है।

मृतकों की शिनाख्त टिकरी खुर्द निवासी गौरव और नजफगढ़ निवासी साहिल के रूप में हुआ है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि शनिवार रात पुलिस को हरिशचंद अस्पताल से दो युवकों के झुलसने के बाद भर्ती कराए जाने की जानकारी मिली। सूचना मिलते ही पुलिस अस्पताल पहुंची। जहां पुलिस को पता चला कि डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया है। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू की।

छानबीन में पता चला कि गौरव अपने पिता संतोष, मां और दो बहनों के साथ टिकरी खुर्द नरेला में रहता था। उसके पिता फर्नीचर का काम करते हैं। परिवार वालों ने बताया कि गौरव पढ़ाई के साथ साथ इलाके में रेहड़ी लगाकर दीवाली के दीपक, प्लास्टिक का फूल सहित अन्य सामान बेचता था। साहिल उसके दूर का रिश्तेदार व दोस्त था। परिवार वालों ने बताया कि शनिवार रात परिवार के लोग भूतल के कमरे में सो रहे थे, जबकि गौरव और उसका दोस्त पहली मंजिल पर बने कमरे में थे। 11.30 बजे अचानक कमरे में धमाका हुआ। उसके पिता और परिवार के अन्य सदस्यों ने देखा कि गौरव के कमरे से धुआं निकल रहा है। वह तुरंत वहां पहुंचे और कमरे के दरवाजे को तोड़ा। दोनों युवक खाट के बीच में झुलसे पड़े थे जबकि खाट पूरी तरह से जल चुकी थी। कमरे में दीवाली में इस्तेमाल सामान बिखरे पड़े थे। उन लोगों ने कमरे में सामान में लगी आग को बुझाया और घायलों को अस्पताल लेकर गए।

कमरे से मिला पोटाश और गंधक

छानबीन के दौरान पुलिस ने क्राइम और फोरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया। टीम ने छानबीन करने के बाद कमरे से कई साक्ष्य हासिल किए। छानबीन के दौरान पुलिस ने बताया कि कमरे से पोटाश और गंधक मिला है। आशंका है कि गौरव और साहिल कमरे में गंधक और पोटाश को मिलाकर पटककर फोड़ने वाला पटाखा बना रहे थे। पुलिस अधिकारी का कहना है कि शुरुआती जांच में पता चला है कि पोटाश और गंधक का मिश्रण फटने से धमका हुआ है।

दिल्ली पुलिस में भर्ती होना चाहता था गौरव

गौरव की मौत के बाद परिवार में मातम है। उसके ताऊ हरिकेश ने बताया कि गौरव पढाई के साथ अपने पिता को आर्थिक मदद करने के लिए रेहड़ी पर दुकान लगाता था। वह पढ़ लिखकर दिल्ली पुलिस में भर्ती होना चाहता था। इसके लिए वह तैयारी कर रहा था। उन्होंने बताया कि गौरव कोई नशा नहीं करता था। जबकि साहिल बीड़ी पीता था। परिवार वालों का कहना है कि बीड़ी से आग लगने की आशंका है। उन्होंने बताया कि गौरव रेहड़ी पर मोमबत्ती और बच्चों के लिए फुलझड़ी रखता था, लेकिन उन लोगों को यह पता नहीं है कि वह गंधक और पोटाश से पटाखे तैयार कर रहा था।

गुरुग्राम में लिखी पटकथा... दिल्ली से मॉनिटरिंग और नोएडा में ऑपरेशन; एल्विश के पीछे लगी थी पीएफए

यूट्यूबर एल्विश के सांप के साथ सैकड़ों वीडियो व फोटो सोशल मीडिया पर है। कई बार एल्विश पर सांप की तस्करी करने व स्नैक बाइट के आरोप लगे थे। पीएफए संस्था इसकी पड़ताल में लग गई। इसके लिए पहले गुरुग्राम में तैयारी की गई लेकिन वहां बात नहीं बनी। इसके बाद इस पटकथा को नोएडा में आगे बढ़ाया गया और पीएफए शुरुआती बाजी में मार गई।

नई दिल्ली। सांप और सपेरे के चक्कर में फंसे बिग बॉस विजेता एल्विश यादव मामले की पटकथा गुरुग्राम में लिखी गई थी और दिल्ली से इसकी मॉनिटरिंग हो रही थी, जबकि नोएडा में इस ऑपरेशन को अंजाम दिया गया।

मामले में पीपुल्स फॉर एनिमल संस्था ने सपेरों और राहुल के साथ-साथ एल्विश के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा दी लेकिन अब पुलिस को एल्विश और राहुल के बीच के कनेक्शन को जोड़ने में पसीना आ रहा है। अब तक एल्विश को न कोई नोटिस न ही पूछताछ के लिए नोएडा पुलिस ने संपर्क किया है।

यूट्यूबर एल्विश के सांप के साथ सैकड़ों वीडियो व फोटो सोशल मीडिया पर है। कई बार एल्विश पर सांप की तस्करी करने व स्नैक बाइट के आरोप लगे थे। इसके बाद मेनका गांधी संचालित पीएफए संस्था इसकी पड़ताल में लग गई। इसके लिए पहले गुरुग्राम में तैयारी की गई और वहां पर रेव पार्टी आयोजन करने को लेकर एल्विश के लोगों से संपर्क किया गया लेकिन वहां बात नहीं बनी।

इसके बाद इस पटकथा को नोएडा में आगे बढ़ाया गया और पीएफए शुरुआती बाजी में मार गई। इसके बाद पीएफए की तरफ से कोतवाली सेक्टर-49 पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करा दी। पूरे मामले की मॉनिटरिंग दिल्ली से हो रही थी। अब जब यह मामला हाईप्रोफाइल बन गया तब नोएडा पुलिस भी फूंक-फूंक कर कदम रख रही है।

पीपुल्स फॉर एनिमल संस्था की तरफ से एनसीआर से लेकर अन्य शहरों में संगठन बनाया गया है, हालांकि वर्तमान में नोएडा में पीएफए की यूनिट नहीं है। अभी दिल्ली व आसपास के शहरों के लोग ही यहां काम करते हैं।

इस प्रकरण में भी जो पीएफए की टीम लगी हुई थी, वह गाजियाबाद की बताई जा रही है। पीएफए के पूर्व कानूनी सलाहकार विशाल गौतम का कहना है कि मामले की जांच होनी चाहिए, हालांकि प्राथमिक जानकारी के मुताबिक एल्विश की मामले में किसी तरह की भूमिका नहीं दिखाई दे रही है।

राहुल एल्विश कनेक्शन की जांच : मामले में गिरफ्तार राहुल और एल्विश के बीच कनेक्शन की जांच सबसे अहम है। चूंकि स्टिंग ऑपरेशन में यह बात सामने आई है कि एल्विश ने राहुल का नंबर दिया था। अब पुलिस एल्विश व राहुल के बीच तार जोड़ने में लगी है। अगर पुलिस एल्विश व राहुल के बीच तार को नहीं जोड़ पाती है तो बैकफुट पर आना पड़ेगा।

कई नाम आ सकते हैं सामने : इस हाईप्रोफाइल प्रकरण में कई एंगल पर जांच की जा रही है और अभी कई परतें खुलनी हैं। पुलिस की जांच में कई और नाम सामने आ सकते हैं। हालांकि इस मामले में अब राजनीतिक दखल की चर्चाएं भी जोरों पर है।

छह महीने से पीएफए के रडार पर थे एल्विश, अप्रैल में वायरल हुआ था वीडियो; कई यूट्यूबर्स ने भी की थी शिकायत

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा में रेव पार्टी में सांप के जहर की तस्करी के मामले में फंसे बिग बास सीजन दो (Big Boss Season 2) के विजेता एल्विश यादव (Elvish Yadav) छह महीने से पीपल्स फॉर एनिमल (पीएफए) के रडार पर थे। अप्रैल में यूट्यूब पर सांप के साथ वीडियो प्रसारित होने के बाद कई यूट्यूबर अैर एनिमल वेलफेयर के लोगों ने पीएफए से संपर्क कर विरोध जताया था।

गुरुग्राम। नोएडा में रेव पार्टी में सांप के जहर की तस्करी के मामले में फंसे बिग बास सीजन दो (Big Boss Season 2) के विजेता एल्विश यादव (Elvish Yadav) छह महीने से पीपल्स फॉर एनिमल (पीएफए) के रडार पर थे। अप्रैल में यूट्यूब पर सांप के साथ वीडियो प्रसारित होने के बाद कई यूट्यूबर और एनिमल वेलफेयर के लोगों ने पीएफए से संपर्क कर विरोध जताया था। इस पर पीएफए के आफिसर सौरभ गुप्ता ने गुरुग्राम के पुलिस आयुक्त को ई-मेल से शिकायत भी भेजी थी। 15 अक्टूबर को भेजी गई शिकायत में कहा गया कि अप्रैल 2023 में एल्विश यादव का एक वीडियो यूट्यूब पर सामने आया। इस वीडियो में वह सांप के साथ नजर आ रहे थे।

कार्रवाई की मांग की

इस पर कुछ यूट्यूबर्स और एनिमल्स वेलफेयर संस्था के लोगों ने एनीमल्स को नुकसान पहुंचाने को लेकर मेनका गांधी की संस्था पीपल्स फॉर एनिमल से शिकायत की। संस्था में कार्यरत ऑफिसर गौरव गुप्ता और सौरभ गुप्ता के पास वॉट्सऐप पर मैसेज भेजे गए। इसके बाद दोनों ने इस मामले की जांच की।

15 अक्टूबर को भेजा शिकायती मेल

एनीमल्स उपलब्ध कराने वालों से भी पूछताछ की गई। इसके बाद 15 अक्टूबर को सौरभ गुप्ता की तरफ से गुरुग्राम पुलिस आयुक्त को ई-मेल भेज कर शिकायत की गई। इसमें एनिमल एक्ट के तहत कार्रवाई करने की मांग की। 15 दिन बाद भी इस मामले में कार्रवाई नहीं हुई।

सौरभ के अनुसार दो दिन पहले गुरुग्राम साइबर पुलिस की तरफ से उनके पास एक काल आई और उनसे इस वीडियो के फिल्माने वाली जगह के बारे में पूछा गया।

जांच के दौरान सामने आई सांपों के जहर की तस्करी की बात

सौरभ के अनुसार जब वह वीडियो के बारे में जांच कर रहे थे तो यह निकलकर सामने आया कि राहुल नाम का व्यक्ति गुरुग्राम, नोएडा, दिल्ली व अन्य जगहों पर होने वाली रेव पार्टी में सांपों के जहर की तस्करी करने में शामिल है। सौरभ व गौरव ने बताया कि राहुल ने बातचीत में एल्विश यादव का भी नाम लिया।

इसके बाद उन्होंने एक जाल बिछाया और राहुल से बात कर नोएडा में रेव पार्टी आयोजित करने के लिए कहा। यहां पर बुलाकर पुलिस के माध्यम से इनका पर्दाफाश किया गया।एल्विश का नाम नोएडा में दर्ज उस एफआइआर में शामिल है, इसमें कुल छह नामजद और कुछ अज्ञात आरोपी शामिल हैं।

एल्विश के घर पर ताला

गुरुग्राम के वजीराबाद में रहने वाले यूट्यूबर एल्विश यादव के घर पर दो दिनों से ताला लगा है। उनके पिता भी किसी का फोन नहीं रिसीव कर रहे हैं। बताया जाता है कि एल्विश को एक लड़की के नाम से शनिवार दोपहर पार्सल भेजा गया। डिलीवरी ब्वॉय पार्सल लेकर एल्विश के घर के बाहर खड़ा रहा। आधे घंटे तक आवाज लगाने के बावजूद घर से कोई व्यक्ति बाहर नहीं आया। डिलीवरी ब्वॉय ने पड़ोसियों से भी पूछा, लेकिन किसी ने भी पार्सल रिसीव नहीं किया। इसके बाद वह पास में स्थित एक दुकान में पार्सल देकर चला गया।

सावधान: गुरुग्राम में एम्बुलेंस को रास्ता न देने वाले वाहन चालकों पर होगी कार्रवाई, लगेगा 10 हजार रुपये का जुर्माना

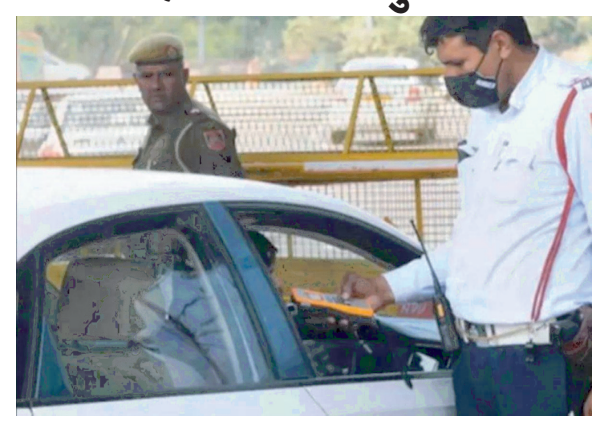

गुरुग्राम। सड़क पर यातायात के दौरान एम्बुलेंस को रास्ता न देने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। इसके लिए वाहन चालकों पर कड़ी नजर रहेगी। पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा ने ट्रैफिक पुलिसकर्मियों को इसके लिए निर्देशित किया है।

शुक्रवार को सीएमओ डॉ. वीरेंद्र यादव ने पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा से मुलाकात कर यह मुद्दा उठाया।

सीएमओ ने कहा कि देखने में आया है कि जब कोई एम्बुलेंस एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा रहा होती है तो सड़कों पर चलने वाले वाहन चालकों द्वारा उसको नजरअंदाज करते हुए रास्ता नहीं दिया जाता। अब ऐसे वाहन चालकों पर कार्रवाई की जाएगी।

ऐसे वाहन चालकों पर रहेगी खास नजर

इस दौरान विकास अरोड़ा ने कहा कि गुरुग्राम पुलिस अब ऐसे वाहन चालकों पर खास नजर रखेगी जो एम्बुलेंस को रास्ता नहीं देते हैं। एक दिसंबर से इसे लेकर विशेष अभियान भी चलाया जाएगा। इसके तहत एम्बुलेंस को रास्ता ना देने वालों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की जाएगी।

कंपनी के वॉशरूम में बनते थे महिला कर्मियों के VIDEO, एक कॉल ने खोला सफाईकर्मी की घिनौनी करतूत का राज

गुरुग्राम स्थित एक एमएनसी कंपनी के वॉशरूम में महिला कर्मियों की वीडियो बनाने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी उसी कंपनी में चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी था। जब उसने मोबाइल को रिकॉर्ड मोड में रखा तभी किसी का कॉल आ गया। इसके बाद एक महिला कर्मचारी ने इसकी शिकायत कंपनी प्रबंधन से की। इसके बाद यह राज खुल पाया।

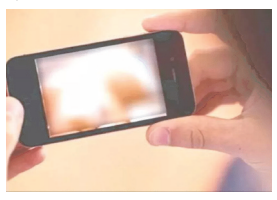

गुरुग्राम। महिलाओं विरुद्ध अपराध रोकने और महिला सुरक्षा के लिए पुलिस लगातार प्रयासरत है। इसके बावजूद भी कुछ लोग ऐसे कारनामें कर देते हैं, जिनके कारण पुलिस और कंपनी प्रबंधन पर प्रश्न चिन्ह लग जाते हैं।

जिले के बादशाहपुर थाना क्षेत्र में एक एमएनसी कंपनी के वॉशरूम में अपने मोबाइल से महिला कर्मियों की वीडियो बनाने का मामला सामने आया है। बादशाहपुर थाना पुलिस ने आरोपी दीपक के विरुद्ध मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया और अदालत में पेश किया। अदालत ने उसे भोंडसी जेल भेजने के आदेश दिए।

कॉल आने से मामले का हुआ पर्दाफाश

बादशाहपुर थाना क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर-आठ पर स्थित एक एमएनसी कंपनी का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पिछले काफी दिनों से महिलाओं के वॉशरूम में उनकी वीडियो बना रहा था। रात के समय वीडियो बनाने के दौरान उसके फोन पर किसी की कॉल आ गई। उसकी वजह से फोन की लाइट ऑन होने और फोन नीचे गिरने के कारण इस मामले का पर्दाफाश हुआ।

महिला ने प्रबंधन को घटना के बारे में बताया

वॉशरूम में गई एक महिला कर्मी ने इस मामले की जानकारी प्रबंधन को दी। कंपनी प्रबंधन ने आरोपी दीपक को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। आरोपी के कब्जे से मोबाइल बरामद कर लिया गया है। बादशाहपुर थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है। जांच के बाद ही पता लगेगा कि वह वीडियो किस उद्देश्य से बना रहा था और कब से बना रहा था?

शनिवार को भी दिनभर आसमान में स्मॉग की चादर छाने से इंदिरापुरम, वसुंधरा समेत सभी इलाकों की हवा जहरीली रही।

सांसों पर संकट: गाजियाबाद में 20 विभागों की नाकामी, स्मॉग की चादर से घुट रहा लोगों का दम

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद। जिले के 20 से अधिक विभागों के अधिकारियों की नाकामी से स्मॉग की चादर लोगों का दम घोंट रही है। अगर सभी विभाग अपनी जिम्मेदारी निभाते तो लोगों को जहरीली हवा में सांस नहीं लेनी पड़तीं।

शनिवार को भी दिनभर आसमान में स्मॉग की चादर छाने से इंदिरापुरम, वसुंधरा समेत सभी इलाकों की हवा जहरीली रही। इससे लोगों की आंखों में जलन व अस्पतालों में सांस के मरीज बढ़ गए हैं।

480 पहुंचा लोनी का AQI

जिले में शनिवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) बेहद खराब श्रेणी में 394 व लोनी का गंभीर श्रेणी में 480 दर्ज किया गया। प्रदूषण से सबसे ज्यादा परेशानी बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले लोगों को हो रही है। इंदिरापुरम साया गोल्ड एवेन्यू सोसायटी से ली गई एक वीडियो एक्स पर पोस्ट की गई है।

इसमें पूरा इंदिरापुरम स्मॉग की मोटी परत से ढका हुआ दिखाई दे रहा है। इस पर लोग जिला प्रशासन पर सवाल उठाते हुए विभिन्न प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। इंदिरापुरम के हरीश ने बताया कि उनका फ्लैट 15वीं मंजिल पर है।

फ्लैट की बालकनी में रहने पर दम घुटने लगता है। सोसायटी के ग्राउंड पर जाने पर थोड़ी राहत मिलती है। जिन विभागों को प्रदूषण रोकथाम की जिम्मेदारी दी गई है वह केवल कागजों में कार्रवाई कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि जब तक अधिकारी जमीनी स्तर पर कार्रवाई नहीं करेंगे। प्रदूषण रोकना संभव नहीं है।

अवैध औद्योगिक इकाइयां लोनी में बढ़ा रहीं प्रदूषण

लोनी में बड़ी संख्या में संचालित अवैध औद्योगिक इकाइयां प्रदूषण को बढ़ाने का काम कर रही हैं। इन फैक्ट्रियों में तार जलाकर धातु निकालने से लेकर विभिन्न कार्य किए जा रहे हैं। जिला प्रशासन व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी यहां अवैध इकाइयों का संचालन नहीं रोक पा रहे हैं।

तेज हवा चलने व वर्षा होने पर प्रदूषण कम होने की उम्मीद

अधिकारियों से लोगों का विश्वास उठ गया है। उन्हें अब तेज हवा चलने व वर्षा होने पर ही प्रदूषण कम होने की उम्मीद नजर आ रही है। लोगों का कहना है कि अगर पहले से प्रदूषण रोकने के ठोस इंतजाम किए गए होते तो यह स्थिति नहीं बनती।

ये लगी हैं पाबंदियां, लेकिन नहीं हो रहा पालन

एनसीआर में सभी निर्माण कार्यों पर रोक।
सड़कों की मशीनों से सफाई।
हॉटस्पॉट क्षेत्रों में हर घंटे पानी का छिड़काव।
भोजनालयों पर कोयला व लकड़ी जलाने पर रोक।
निजी से ज्यादा सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा।
खुले में अपशिष्ट डंप करने पर रोक।

मुख्य मार्गों पर जाम न लगने के इंतजाम।
उम्र पूरी कर चुके वाहनों को सील।
निजी परिवहन को कम करने के लिए पार्किंग शुल्क बढ़ाना।

विभागों को दी गई थीं ये जिम्मेदारी

यूपीपीसीबीः विभिन्न स्तरों पर योजना बनाकर प्रदूषण रोकना।
नगर निगमः धूल वाले इलाकों में पानी का छिड़काव करना।
परिवहन विभागः उम्र पूरी कर चुके वाहनों का संचालन रोकना।
कृषि विभागः किसानों को फसल अवशेष जलाने से रोकना।
शिक्षा विभागः प्रदूषण के प्रति स्कूलों में बच्चों को जागरूक करना।
खाद्य विभागः भोजनालयों पर कोयला व लकड़ी को जलाने से रोकना।
राजस्व विभागः पटाखों की बिक्री रोकना रोकने के लिए जागरूक करना।
स्वास्थ्य विभागः वायु प्रदूषण से के नुकसानों के प्रति जागरूक करना।
पीडब्ल्यूडीः मशीन से सड़कों की सफाई व पानी का छिड़काव।
दमकल विभागः आग की घटना रोकना व अति प्रदूषित क्षेत्र में पानी का छिड़काव।
पीवीवीएनएलः निर्बाध विद्युत आपूर्ति करना।

जिले का पिछले पांच दिन का AQI

चार नवंबर	394
तीन नवंबर	410
दो नवंबर	286
एक नवंबर	260
31 अक्टूबर	283
30 अक्टूबर	272

जिले के स्टेशनों का AQI

वसुंधरा	389
इंदिरापुरम	346
संजयनगर	360
लोनी	480

प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्रियों पर जिला प्रशासन के साथ मिलकर कार्रवाई की जा रही हैं। खुले में निर्माण सामग्री रखने व निर्माण करने वालों पर जुर्माना लगाया जा रहा है।

-विकास मिश्र, क्षेत्रीय अधिकारी, यूपीपीसीबी

गाजियाबाद में शनिवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) बेहद खराब श्रेणी में 394 व लोनी का गंभीर श्रेणी में 480 दर्ज किया गया। प्रदूषण से सबसे ज्यादा परेशानी बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले लोगों को हो रही है। जिले में शनिवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) बेहद खराब श्रेणी में 394 व लोनी का गंभीर श्रेणी में 480 दर्ज किया

गीत-नगरी ग्वालियर को यूनेस्को से मिली विश्व मान्यता ने इस शहर की जिम्मेदारियों को और बढ़ा दिया है

ग्वालियर की संगीत परंपरा ग्वालियर का ख्याल, ध्रुपद तो गत पांच शताब्दी से संगीत परिवेश को अनुनादित कर रहा था। राजा मानसिंह की द्वारा ध्रुपद को संस्कृत से लोक-भाषा ब्रज-भाषा के रूप में रूपांतरित कर जन-जन तक स्वीकार करा दिया

राज किशोर वाजपेयी

नए भारत के हुँकार के रूप में साहित्य संगीत की नगरी ग्वालियर को यूनेस्को द्वारा ₹सिटी आफ म्यूजिक₹ के रूप में स्वीकारना भारत की महान सांस्कृतिक परंपराओं की गालव तपोस्थली की भी स्वीकारोक्ति है। ग्वालियर संगीत की 500 वर्षों की विरासत को समेटे अपने संगीतमय स्वरूप को आधिकारिक रूप से मान्य किए जाने से प्रफुल्लित है। तथ्यात्मक रूप से ग्वालियर अपनी संगीत परंपरा के लिए मध्यकाल से ही विख्यात रहा है। यूनेस्को द्वारा इसको सिटी आफ जॉय सिटी आफ म्यूजिक के रूप में स्वीकारने के लिए पूर्व से ही पर्याप्त आधार थे लेकिन विलंब से ही से ही विश्व पटल पर सत्य की स्वीकारोक्ति हुई है। मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग ने इसका प्रस्ताव यूनेस्को को भेजा था और इस प्रस्ताव को स्वीकारने का आधार ग्वालियर की संगीत परंपरा, स्मारक समूह, विश्वविद्यालय, संस्थान, संगीत के राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय आयोजन जैसे मजबूत आधार रहे हैं। यही कारण है ग्वालियर के दावे को नकारना संभव नहीं हो सका।

ग्वालियर की संगीत परंपरा ग्वालियर का ख्याल, ध्रुपद तो गत पांच शताब्दी से संगीत परिवेश को अनुनादित कर रहा था। राजा मानसिंह की द्वारा ध्रुपद को संस्कृत से लोक-भाषा ब्रज-भाषा के रूप में रूपांतरित कर जन-जन तक स्वीकार करा दिया गया। बैजू बावरा, जो विख्यात संगीतज्ञ तानसेन के समकालीन थे, उन्होंने बिना दरबारी हुए भी ख्याति प्राप्त की। राजा मानसिंह, बैजू बावरा के अतिरिक्त संगीत सम्राट तानसेन उस्ताद हरसू हद्दू खान जिन्होंने ग्वालियर घराने के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। उस्ताद हाफिज अली खान जिन्होंने प्रसिद्ध बंगश घराने के सरोद वादक, कृष्ण राव शंकर पंडित, राजा भैया पूछ वाले जैसी विभूतियों की परंपरा ग्वालियर में अनवरत देखने को मिलती है, वैसी अन्य जगह कम ही मिलती है।

ग्वालियर का संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर का संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर ग्वालियर का तानसेन संगीत-समारोह, ग्वालियर का सरोद-घर, ग्वालियर का बैजा-ताल का रंगमंच ग्वालियर का मोहम्मद गौस का मकबरा, मान-मंदिर, गूजरी महल, ग्वालियर को संगीत नगरी का ताज पहनाने के लिए समर्थ है। अकबर दरबार के प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन जिनके गाये दीपक राग से दीपक जल जाते थे, राग मल्हार से वर्षा होने लगती थी।

ग्वालियर कला का वह मकरंद है जिसकी सुगंध रूपी विभूतियाँ कला क्षेत्र को सुरभित करती ही रहती हैं। ग्वालियर का संगीत अपने मानकों के साथ-साथ अपनी विरासत के लिए भी प्रसिद्ध है। भारत अपने गौरव के स्थान को प्राप्त कर रहा है। 21वीं शताब्दी विश्व में मानव मूल्यों की स्थापना करते हुए भारत की है। जिसमें कला और मानवता के मूल्य विश्व पटल पर भारत का विश्व-दर्शन करने वाले हैं। 1000 साल के संघर्ष-काल के बाद जगा हुआ भारत तब और अधिक प्रफुल्लित होता है जब एक नवंबर को मध्य प्रदेश के स्थापना दिवस पर ग्वालियर को विश्व संस्था द्वारा सिटी आफ म्यूजिक के रूप में स्वीकार किया जाता है। अब ग्वालियर की जिम्मेदारी और महत्व दोनों बढ़ गए हैं। हमें अपनी विश्व-व्यापी ख्याति को न केवल सहेजना है गौरवान्वित करना है, बल्कि उसको और समृद्धि करना है। आने वाले समय में विश्व पर्यटन के केंद्र के रूप में ग्वालियर विश्व मानचित्र पर और अधिक सम्मोहन के साथ में अपने स्वरूप को प्रस्तुत करेगा। यह अवसर हम सब की प्रसन्नता के साथ-साथ जिम्मेदारियों का भी है। हम अपने गौरव के साथ-साथ भारत उदय साधनाष-यज्ञ में अपने आप को सचेष्ट रखें। यही समय की मांग है और यही हमारी प्रसन्नता का विजयी उद्घोष भी। स्वर्णिम-भविष्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

-राज किशोर वाजपेयी 'अभय'
विश्व संवाद केंद्र, भोपाल

मारुति इन्वीक्टो खरीदने का है प्लान? जानें कितने महीने तक का है वेटिंग

एंट्री लेवल ज़ेटा+ 7-सीटर वेरिएंट की कीमत 24.79 लाख रुपये ज़ेटा+ 8-सीटर की कीमत 24.84 लाख रुपये और अल्फा+ 7-सीटर की कीमत 28.42 लाख रुपये है (सभी कीमतें एक्स-शोरूम हैं)। यह मारुति की सबसे महंगी कार है कंपनी का पहला ऑटोमैटिक ओनली मॉडल है।

मारुति इनविक्टो पर 8 से 10 महीने का वेटिंग पीरियड है जो शहर के हिसाब से अलग-अलग है।

नई दिल्ली। कंपनी की सबसे प्रीमियम कार है। अगर आप इसको खरीदने का प्लान बना रहे हैं और जानना चाहते हैं इसके वेटिंग पीरियड के बारे में तो आप सही जगह पर हैं। इस खबर के माध्यम से आपको Maruti Invicto वेटिंग पीरियड के बारे में बताने जा रहे हैं।

हाइक्रास का रिबैज मॉडल है इनविक्टो

जुलाई 2023 में, मारुति सुजुकी ने अपना पहला री-बैज टोयोटा मॉडल, इनविक्टो हाइब्रिड एमपीवी पेश किया। टोयोटा इनोवा हाइक्रॉस पर आधारित, जो वर्तमान में भारत की सबसे अधिक बिकने वाली हाइब्रिड कार है, मारुति इनविक्टो दो ट्रिम्स - ज़ेटा और अल्फा + में आती है और दो सीटिंग कॉनफ़िगरेशन ऑफर करती है।

कितनी है कीमत?

एंट्री लेवल ज़ेटा+ 7-सीटर वेरिएंट की कीमत 24.79 लाख रुपये, ज़ेटा+ 8-सीटर की कीमत 24.84 लाख रुपये और अल्फा+ 7-सीटर की कीमत 28.42 लाख रुपये है (सभी कीमतें एक्स-शोरूम हैं)। यह मारुति की सबसे महंगी कार है कंपनी का पहला ऑटोमैटिक ओनली मॉडल है। इस कार के इंटीरियर को और शानदार बनाने के लिए कंपनी ने इसमें पैनारोमिक सनरूफ दिया है। जो इलेक्ट्रिक सनरूफ़ एम्बिएंट लाइटिंग के साथ काफी अच्छा दिखता है।

कितना है वेटिंग पीरियड?

मारुति इनविक्टो पर 8 से 10 महीने का वेटिंग पीरियड है, जो शहर के हिसाब से अलग-अलग है। कंपनी के पास 5,000 यूनिट्स का बैकलॉग है। टोयोटा इनोवा हाईक्रॉस ZX और ZX (O) की प्रतीक्षा अवधि 15 महीने है, और इन दोनों वेरिएंट के लिए बुकिंग अब स्वीकार नहीं की जा रही है।

इस कार में फीचर्स के तौर पर इन-बिल्ट सुजुकी कनेक्ट टेक्नोलॉजी को शामिल किया गया है। इसके साथ ही इसमें ई-केयर, विंडो को बंद करने के लिए रिमोट पावर फ़ंक्शन, रिमोट सीट वेंटिलेशन, ई-कॉल जैसे कई फीचर्स मिलते हैं।

सिंगल चार्ज में तगड़ा रेंज देते हैं ये इलेक्ट्रिक स्कूटर, कीमत है मात्र इतनी

हम आपके लिए ऐसे इलेक्ट्रिक स्कूटर लेकर आए हैं जो एक बार में ही आपको सिंगल चार्ज में 150 किलोमीटर तक की रेंज मिलेगी।

नई दिल्ली : इलेक्ट्रिक स्कूटर खरीदते समय लोगों के मन में यह सवाल जरूर रहता है कि कहीं यह बीच में धोखा ना दे जाए, जो की एक जायज सवाल है।

दरअसल पिछले कुछ सालों में इलेक्ट्रिक स्कूटर इस्तेमाल करने वाले ग्राहकों का एक्सपीरियंस अच्छा नहीं रहा है. ऐसे में अब जितने भी इलेक्ट्रिक स्कूटर मार्केट में मौजूद है उन सभी में इस बात का खास ख्याल रखा जाता है कि एक अच्छी रेंज इनमें ऑफर की जाए साथ ही इनमें दमदार फीचर्स भी हो जिनकी बदौलत आप मजे से लंबा सफर कर पाएं। आज हम आपके लिए ऐसे इलेक्ट्रिक स्कूटर लेकर आए हैं जो एक बार में ही आपको सिंगल चार्ज में 150 किलोमीटर तक की रेंज मिलेगी।

एथर 450X (रेंज: 146 किमी)

Best Range E-Scooter : एथर 450X भारत के प्रमुख ईवी स्टार्टअप्स में से एक की ओर से पेश किया जाने वाला एक प्रीमियम इलेक्ट्रिक स्कूटर है। यह ईवी एक बार चार्ज करने पर 146 किमी की रेंज देने का दावा करती है, जो स्कूटर में लगे 3.7kWh बैटरी पैक से आता है। इस बैटरी पैक को PMS मोटर से जोड़ा गया है जो 6.5kW का अधिकतम पावर आउटपुट और 26Nm का पीक टॉर्क पैदा करता है। यह पावरट्रेन एथर 450X को 90 किमी प्रति घंटे की टॉप स्पीड तक जाने में भी मदद करता है। बैटरी पैक को घरेलू चार्जर से 5 घंटे 40 मिनट में शून्य से 100 प्रतिशत तक चार्ज किया जा सकता है। एथर 450X में डिस्क ब्रेक, 22 लीटर का बूट स्पेस, ऑटो होल्ड, 12 इंच के अलॉय व्हील, राइडिंग मोड और आईपी सर्टिफिकेशन भी शामिल हैं। एथर 450X कंपनी के एथरस्टैक सॉफ्टवेयर के साथ एक आजमाया हुआ और परीक्षण किया हुआ 7-इंच टीएफटी कलर टचस्क्रीन भी प्रदान करता है जो स्कूटर से जुड़े वाहन सुविधाएँ प्रदान करता है।

Best Range E-Scooter : टीवीएस आईक्यूब एसटी टीवीएस की सबसे सुसज्जित ईवी पेशकश है और एक बार चार्ज करने पर 145 किमी की रेंज देने का वादा करती है। चार्ज को ऑनबोर्ड 4.56kWh ली-आयन IP67 बैटरी पैक में संग्रहीत किया जाता है, जिसे 950W चार्जर के माध्यम से शून्य से 80 प्रतिशत तक चार्ज होने में लगभग 4 घंटे और 6 मिनट का समय लगता है। स्कूटर में एलईडी लाइटिंग, एक प्रैक्टिकल फ्लोरबोर्ड, डिस्क ब्रेक, आरामदायक सस्पेंशन, 12-इंच अलॉय व्हील, कनेक्टेड तकनीक, 7-इंच टचस्क्रीन आदि जैसे फीचर्स मिलते हैं।

अगर बीच रास्ते में अचानक बंद हो जाए आपकी बाइक तो तुरंत करें ये काम

कई बार बाइक का स्पार्क प्लग ढीला हो जाता है या फिर उसे पर कार्बन आ जाता है जिससे बाइक स्टार्ट नहीं होती है ऐसे में जब भी बीच रास्ते में आपकी बाइक बंद हो तो आप सबसे पहले स्पार्क प्लग को खोलें। बता दें स्पार्क प्लग इंजन पर दिया गया होता है। इसे खोलने के बाद आप एक सूखे कपड़े से उसे पोछकर दोबारा उसी स्थान पर लगा दें।

नई दिल्ली। सर्दियों के मौसम में कई बारसड़क परबाइक अचानक बंद हो जाती हैऐसे मेंबहुत सारे लोग परेशान हो जाते हैंइसलिएइस खबर के माध्यम से आपको बताने जा रहे हैंउन खास तरीके के बारे में जिसको फॉलो करके आप जिसको फॉलो करके आपइस मुसीबत सेनिपट सकते हैंइससेआपकोमैकेनिक की जरूरत नहीं पड़ेगी

स्पार्क प्लग को करें चेक

कई बार बाइक का स्पार्क प्लग ढीला हो जाता है या फिर उसे पर कार्बन आ जाता है, जिससे बाइक स्टार्ट नहीं होती है, ऐसे में जब भी बीच रास्ते में आपकी बाइक बंद हो तो आप सबसे पहले स्पार्क प्लग को खोलें। बता दें, स्पार्क प्लग इंजन पर दिया गया होता है। इसे खोलने के बाद आप एक सूखे कपड़े से उसे पोछकर दोबारा उसी स्थान पर लगा दें। ध्यान रखें जब आप इसको इंस्टॉल कर रहे होंगे तो आप टाइटली से पैक करना ना भूले। अब आप बाइक चेक करें कि स्टार्ट हो रही है या फिर नहीं इसके बावजूद भी अगर आपकी बाइक स्टार्ट नहीं हो रही है तो आप अन्य चीजों पर ध्यान दे सकते हैं- उदाहरण के तौर पर फ्यूल चेक करें की गाड़ी में तेल है या नहीं

लो बैटरी हो सकता है कारण

कई बार लो बैटरी होने के कारण बाइक स्टार्ट नहीं होती है। ऐसे में आप सेल्फ स्टॉर्ट करते समय इंजन से आने वाली आवाज को सुने आपको पता चल जाएगा कि बैटरी चार्ज है या नहीं बहुत सी मोटरसाइकिलों के स्पीडोमीटर पर ही चिन्ह बन कर आ जाता है।

बैटरी लो हो तो ऐसे करें स्टार्ट

आप सबसे पहले अपनी मोटरसाइकिल को मेन स्टैंड पर खड़ा करें, इसके बाद बाइक को तीसरे या चौथे गियर में डाल दें। फिर तेजी से मोटरसाइकिल के पिछले टायर को घुमाएं। इसके बाद आप देखेंगे आपकी बाइक स्टार्ट होना शुरू हो जाएगी। आपको इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि अगर आपके बाइक का क्लच प्लेट वीक है तो ये टॉप गियर में नहीं चालू होगी। इसके लिए आपको लो गियर का इस्तेमाल करना होगा।

मारुति बलेनो के सभी वेरिएंट पर मिल रहा डिस्काउंट

मारुति सुजुकी बेलेनो में 1.2-लीटर फोर-सिलेंडर पेट्रोल इंजन दिया जाता है। यह माइल्ड हाइब्रिड तकनीक को हटाके इंजन अब डुअल वीवीटी और डुअलजेट तकनीक के साथ आता है। इसका इंजन 90 का मैक्सिमम हॉर्सपावर और 113 एनएम का पीक टॉर्क जेनरेट करने में सक्षम है। इंजन को 5-स्पीड मैनुअल और 5-स्पीड ऑटो-गियर-शिफ्ट (AGS) ट्रांसमिशन से जोड़ा गया है।

नई दिल्ली। क्या आप इस दिवाली नई कार खरीदने का प्लान है? अगर हां तो आपको बता दें, नवंबर महीने में अधिकतर वाहन निर्माण करने वाली कंपनियां अपने गाड़ियों पर डिस्काउंट ऑफर दे रही हैं। इसी क्रम में मारुति भी दिवाली ऑफर के तौर पर अपनी अधिकतर गाड़ियों पर छूट दे रही हैं। हालांकि हम इस खबर के माध्यम से बात करने वाली हैं केवल मारुति बेलेनो के बारे में। यहां आपको बताएंगे अगर इस महीने आप बलेनो को खरीदते हैं तो कितने की बचत हो सकती है।

प्रीमियम बलेनो हैचबैक मारुति को अगर आप इस महीने खरीदते हैं तो आपको दिवाली ऑफर के तौर पर 20 हजार रुपये तक की छूट मिल सकती है। ये ऑफर सभी वेरिएंट पर उपलब्ध है। वहीं कुछ वेरिएंट्स पर 10 हजार रुपये तक का एक्सचेंज बोनस भी मिल सकता है।

कितना दमदार है इसका इंजन?

मारुति सुजुकी बेलेनो में1.2-लीटर, फोर-सिलेंडर, पेट्रोल इंजन दिया जाता है। यह माइल्ड हाइब्रिड तकनीक को हटाके इंजन अब डुअल वीवीटी और डुअलजेट तकनीक के साथ आता है। इसका इंजन 90 हॉर्सपावर और 113 एनएम का पीक टॉर्क जेनरेट करने में सक्षम है। इंजन को 5-स्पीड मैनुअल और 5-स्पीड ऑटो-गियर-शिफ्ट (AGS) ट्रांसमिशन से जोड़ा गया है।

कैसा है इसका इंटीरियर?

इस कार के इंटीरियर को काफी बढ़िया तरीके से बनाया गया है। इसमें 9-इंच टचस्क्रीन है जो कनेक्टेड फीचर्स और फास्ट-चार्जिंग रियर एसी वेंट के साथ आता है। सुरक्षा को लेकर भी काम किया गया है। बलेनो के टॉप ट्रिम में अब 6 एयरबैग्स, ईबीडी के साथ एबीएस, हिल होल्ड असिस्ट, 360-डिग्री कैमरे मिलते हैं।

Maruti Baleno Mileage

Baleno केवल इंजन स्टार्ट/स्टॉप तकनीक के साथ काम करती है। नया इंजन मैनुअल के साथ 22.35 किलोमीटर प्रति लीटर और एएमटी के साथ 22.94 किलोमीटर प्रति लीटर देता है

दिवाली पर नई Electric Scooter खरीदने का प्लान? ये हैं टॉप 3 सबसे अधिक रेंज देने वाली इलेक्ट्रिक स्कूटर्स

इस ऑर्टिकल के माध्यम से हम बताने जा रहे हैं देश में बिकनी वाली उन टॉप 3 इलेक्ट्रिक स्कूटर्स के बारे में जो सबसे अधिक रेंज देने के लिए जानी जाती हैं। इस लिस्ट में सिंपलवन इलेक्ट्रिक स्कूटर्स से लेकर हीरो की ईवी के नाम शामिल हैं। इस दिवाली नई ईवी लेने का प्लान है तो इसे विकल्प के तौर पर देख सकते हैं।

नई दिल्ली। दिवाली के इस खास मौके पर अगर आप भी नई इलेक्ट्रिक स्कूटर खरीदने के बारे में सोच रहे हैं और जानना चाहते हैं कि देश में बिकने वाली वो कौन सी इलेक्ट्रिक स्कूटर्स हैं, जो इस समय सबसे अधिक रेंज देने के लिए जानी जाती हैं तो आप सही जगह पर हैं। क्योंकि इस खबर के माध्यम से आपको बताने जा रहे हैं देश की टॉप 3 हाई रेंज देने वाली इलेक्ट्रिक स्कूटर्स के बारे में।

Simple One

सिंपल वन इलेक्ट्रिक स्कूटर ARAI-प्रमाणित रेंज 212 किमी है, जो इसे भारत में सबसे लंबी दूरी की इलेक्ट्रिक स्कूटर बनाती है। यह 4.8 kWh की बैटरी पैक से लैस है। इसकी अधिकतम गति 105 किमी प्रति घंटा है। सिंपल वन इलेक्ट्रिक स्कूटर को कई कलर ऑप्शन में पेश किया गया है, जिसमें ब्रेज़ेन ब्लैक, नम्मा रेड, एज़्योर ब्लू और ग्रेस व्हाइट शामिल हैं। इसके अलावा, इसमें ब्रेज़ेन एक्स और लाइट एक्स जैसे नए कलर ऑप्शन को जोड़ा गया है।

Ola S1 Pro

Ola S1 Pro में 3.97kWh लिथियम-ऑयन बैटरी पैक दिया जाता है। Ola S1pro की टॉप स्पीड 116 किलो मीटर प्रति घंटे की है। जो कि बेस्ट इन सेग्मेंट हैं। वहीं ड्राइविंग रेंज की बात करें तो ये भारत में सिंगल चार्ज पर 181 km की धांसू ड्राइविंग रेंज देता है, जो इसे देशा का दूसरा सबसे ज्यादा ड्राइविंग रेंज देने वाला ई-स्कूटर बनाता है।

Hero Vida V1 Pro

हीरो मोटोकॉर्प का पहला इलेक्ट्रिक स्कूटर Vida V1 Pro, फुल चार्ज पर 165 किमी की IDC रेंज देता है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर की टॉप स्पीड 80 किमी प्रति घंटा तय की गई है। यह 3.94 kWh बैटरी पैक से लैस है। रेंज की बात करें तो Vida V1 Plus वेरिएंट की सीमा 143 किमी और V1 Pro की सीमा 165 km है।

हीरो की इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में फीचर्स के तौर पर इसमें ब्लूटूथ, 4जी और वाई-फाई कनेक्टिविटी के साथ 7 इंच के टीएफटी टचस्क्रीन डिस्प्ले मिलता है। इसके साथ ही इसमें एंटी-थेफ्ट अलार्म, ट्रैक माय बाइक, जियोफेंस, रिमोट इमोबिलाइजेशन, व्हीकल डायग्नोस्टिक्स और एसओएस अलर्ट जैसी कई सुविधाएं मिलती है।

फोन 'हैक' की राजनीति कभी भी सत्ताधारी दल के लिए फायदे का सौदा नहीं रही है

ललित गर्ग

आईटी मंत्रालय ने कहा है कि केंद्रीय ऑनलाइन सुरक्षा एजेंसी सीईआरटी-इन (भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम) आईफोन 'हैकिंग' प्रयासों के विपक्ष के दावे की जांच करेगी और वही हैकिंग और फ़िशिंग जैसे साइबर सुरक्षा खतरों का जवाब देने के लिए जिम्मेदार राष्ट्रीय एजेंसी है।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के लगातार आक्रामक होने के मध्य में देश के कुछ प्रमुख विपक्षी नेताओं के आईफोन पर निगरानी किये जाने का मामला एक नया राजनीतिक विवाद खड़ा कर रहा है। इसे सरकार प्रायोजित बताकर सरकार को घेरने की कोशिशें भी एकाएक उग्र हो गयी है। एप्पल कम्पनी ने इन फोन धारकों को ईमेल सन्देश भेज कर लिखा है कि आपके फोन को किसी 'मालवेयर वायरस' से सरकार द्वारा सर्वेक्षण में रखा जा रहा है जिसके माध्यम से आपकी सारी गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है। मगर इसके साथ ही सरकार ने ऐसी किसी कार्रवाई से इन्कार करते हुए पूरे मामले की सूचना प्रौद्योगिकी मन्त्रालय की संसदीय समिति से जांच कराने की घोषणा कर दी है और कहा है कि ऐसा ही एक ई-मेल सन्देश वाणिज्य मन्त्री पीयूष गोयल को भी आया है। फोनों पर निगरानी का आरोप सरकार के लिए भी गंभीर चिन्ता का विषय है क्योंकि यह ऐसा मामला है जिसमें सत्ता से बेदखल होने जैसी स्थितियां बनती हैं। जब तक मामले की पूरी जांच नहीं हो जाती, किसी को भी दोषी ठहराना जल्दीबाजी होगी। पक्ष-विपक्षी दल चुनावी माहौल को धुंधलाने या विवादास्पद बनाने की बजाय उसे स्वस्थ बनाने में सहयोग करें, यह स्वस्थ एवं आदर्श लोकतंत्र की बुनियाद है। किसी की स्वतंत्रता का हनन लोकतंत्र की पवित्रता को ही समाप्त कर देती है।

निश्चित ही किसी लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार की ओर से विपक्षी नेताओं की निजता भंग करने का कोई भी मामला सामने आता है, तो स्वाभाविक ही सरकार को घेरा जाना चाहिए एवं जवाब मांगा जाना चाहिए। लेकिन बिना बुनियाद के ऐसे विवाद खड़े करना उचित नहीं है। अच्छी बात इस मामले में यह है कि सरकार ने इन आरोपों को पूरी गंभीरता से लिया है और तत्परता से निर्णय लेते हुए न केवल पूरे मामले की विस्तृत जांच के आदेश दे दिए गए हैं बल्कि आईफोन कंपनी से भी जांच में शामिल होने को कहा गया है। सभी पक्षों के लिए जरूरी है कि निष्कर्ष निकालने की जल्दबाजी करने के बजाय मामले की बारीक और विश्वसनीय जांच सुनिश्चित करने में सहयोग करें। यह न केवल विपक्षी दलों के नेताओं की निजता से जुड़ा मामला है बल्कि यह लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा एवं प्रतिबद्धता का भी मामला है।

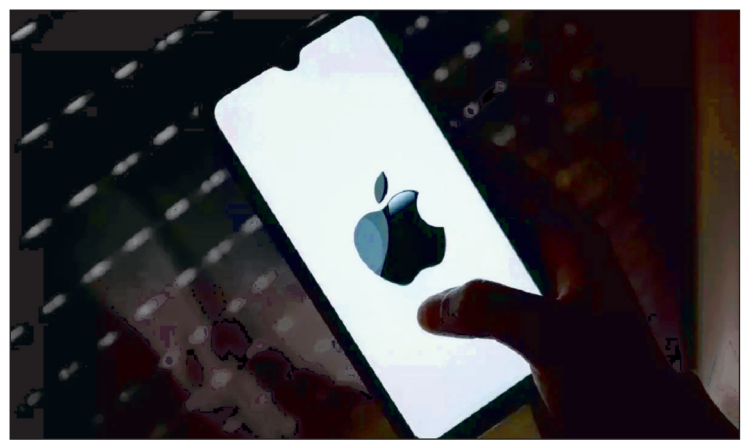

हालांकि यह साफ करना भी जरूरी है कि मौजूदा मामले में अभी बात सिर्फ संदेह की है। आईफोन पर ऐपल की ओर से भेजे गए ये मेसेज ऑटो जेनेरेटेड थे, जिनकी प्रामाणिकता को लेकर कंपनी भी आश्वस्त नहीं है। उसका कहना है कि इनमें से कुछ मेसेज फॉल्स अलार्म के भी हो सकते हैं। इसके बावजूद विपक्षी नेताओं की आशंकाएं निराधार हैं या आधारभूत हैं, यह तो जांच के निष्कर्षों से ही पता लगेगा। मेसेज विपक्षी दलों के नेताओं और कुछ सत्ता विरोधी माने जाने वाले पत्रकारों के ही फोन पर आने का आरोप निराधार है क्योंकि ऐसा ही मेसेज एक केन्द्रीय मंत्री को भी मिला है। सूचना टैक्नोलॉजी क्रान्ति होने के बाद चीजें काफी बदल चुकी हैं अतः आरोपों का स्वरूप भी बदल चुका है। इससे पहले दो वर्ष पूर्व भी देशवासियों ने 'पेगासस' वायरस का पूरा कर्मकांड देखा है जिसकी जांच सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित एक विशेष समिति ने की थी। इस मामले को लेकर दो साल पहले संसद में भी जमकर हंगामा हुआ था। लेकिन उसमें आरोप सिद्ध नहीं हो पाये थे। ऐसे में जब विपक्षी नेताओं के फोन की हैकिंग का यह नया आरोप लगा है तो उसे पूरी गंभीरता से लेने की जरूरत है। इस मामले को लेकर आरोप-प्रत्यारोप से बचते हुए सत्य के उजागर होने तक इंतजार करना चाहिए। सरकार की तरफ से यह भी कहा गया है कि वह पूरे प्रकरण की जांच में एप्पल कम्पनी के उच्च पदाधिकारियों को भी पूछताछ के लिए बुला सकती है। इस मामले में मूल सवाल निजी स्वतन्त्रता का उठता है जिसे सर्वोच्च न्यायालय नागरिकों का मूल अधिकार मान चुका है। लोकतांत्रिक प्रणाली में सभी को लिखने, बोलने, सोचने और करने की स्वतंत्रता होती है।

आईटी मंत्रालय ने कहा है कि केंद्रीय ऑनलाइन सुरक्षा एजेंसी सीईआरटी-इन (भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम) आईफोन 'हैकिंग' प्रयासों के विपक्ष के दावे की जांच करेगी और वही हैकिंग और फ़िशिंग जैसे साइबर सुरक्षा खतरों का जवाब देने के लिए जिम्मेदार राष्ट्रीय एजेंसी है। महुआ मोइत्रा, प्रियंका चतुर्वेदी, राघव चड्ढा, शशि थरूर, पवन खेड़ा और सीताराम येचुरी सहित कई विपक्षी नेताओं ने मंगलवार को दावा किया कि उन्हें एप्पल अलर्ट मिला है जिसमें उनके आईफोन में राज्य प्रायोजित हैकिंग की चेतावनी दी गई है। आईफोन निर्माता एप्पल ने मंगलवार को कहा था कि वह विपक्षी दलों के कुछ सांसदों को भेजे गए चेतावनी संदेश को किसी विशिष्ट सरकार-प्रायोजित सेंधमारों से नहीं जोड़ती और वह इस बारे में जानकारी नहीं दे सकती है कि ऐसी चेतावनियों का कारण क्या है। कारणों का पता तो विस्तृत जांच के बाद ही सामने आयेगा, तब तक पक्ष एवं विपक्ष को शांत रहते हुए विवेक का परिचय देना चाहिए। क्योंकि यह भारत, भारतीय लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था के व्यवस्थित संचालन से जुड़ा मामला है। ताजा मामला इसलिये भी बहुत गंभीर है क्योंकि ऐसे मामलों में सत्ताएं बदलती देखी गयी हैं। इसलिये ऐसे मामलों एवं आरोपों में गंभीरता बरतना जरूरी है।

इस तरह के राजनेताओं एवं राजनीतिक दलों के निजता भंग के कम उदाहरण ही भारत में देखने को मिले हैं लेकिन जब भी किसी सरकार पर इस प्रकार के आरोप लगे तो उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी है। सबसे बड़ा उदाहरण 80 के दशक का है जब कर्नाटक की वीरप्पा मोइली सरकार 'टेप कांड' में फंस गई थी तो उसे सत्ता से बेदखल होना पड़ा था। डॉ. मनमोहन सिंह सरकार पर भी फोन टेप करने के आरोप लगे थे। पूरी दुनिया का सबसे सशक्त और उदार लोकतन्त्र माने जाने वाले अमेरिका के वाटर गेट कांड में रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने अपनी प्रतिद्वन्द्वी डेमोक्रेटिक पार्टी के मुख्यालय पर जासूसी यन्त्र लगा कर उसकी गतिविधियों को जानने की कोशिश की थी। निक्सन भले ही इस मामले पर लम्बी टालमटोल करते रहे हो मगर भारत सरकार ने तो एप्पल फोन कांड का भंडाफोड़ होते ही इसकी जांच कराने की घोषणा कर दूध का दूध, पानी का पानी करने की अपनी संकल्पबद्धता दर्शा दी है। इस हकीकत को भी हमें ध्यान में रखकर ही इस मामले में और टीका-टिप्पणी करनी होगी।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र एक जीवित, निष्पक्ष एवं आदर्श तंत्र है, जिसमें सबको समान रूप से अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार चलने, गतिविधियों को संचालित करने की पूरी स्वतंत्रता है। लोकतंत्र की नींव ही निजता की सुरक्षा करने के सिद्धान्तों पर टिकी है, इस व्यवस्था में प्रत्येक नागरिक संविधान के दायरे में स्वयंभू होता है। अतः इस मुद्दे पर विपक्षी नेताओं की चिन्ता वाजिब मानी जा सकती है मगर इसके साथ ही सरकार की तरफ से तत्परता से व्यक्त इस मामले में संलिप्त न होने की साफगोई बयान को भी नजरंदाज नहीं किया जा सकता। यदि सरकार ने इस मामले में तुरन्त कार्रवाई की है तो उसकी नीयत पर भी शक करने की कोई वजह दृष्टिगोचर नहीं होती। सरकार किसी की भी निजता को भंग करने का आरोप स्वयं कर लगता हुआ देख बिन बुलाये संकट को कैसे आमंत्रित कर सकती है? क्योंकि इस तरह का कोई भी काम पूर्ण रूप से असंवैधानिक व गैर कानूनी होती है। ऐसी अराजकता, अव्यवस्था एवं एकाधिपत्य लोकतंत्र का ही विलुप्त कर सकता है।

संपादक की कलम से

प्रशासनिक ट्रिब्यूनल के द्वार

हिमाचल कर्मचारियों के हितों का मक्का है और इसीलिए प्रदेश के संसाधन इस वर्ग को पूजनीय-वंदनीय बना देते हैं। कमोबेश हर सरकार को अपने संसाधनों से इसी प्रक्रिया में खुद को अव्वल साबित करने के लिए सामग्री जुटानी पड़ती है। राज्य ने कर्मचारी मुद्दों को इतनी तरजीह दे डाली है कि अब राजनीति के डाली-डाली इनके प्रति झुकी रहती है। ओल्ड पेंशन की गोल्ड माइन खोल कर सत्ता में आई कांग्रेस अब प्रशासनिक ट्रिब्यूनल के रास्ते कर्मचारी वर्ग के अधिकारों को न्योता दे रही है। प्रशासनिक ट्रिब्यूनल एक तरह की सियासी रस्साकशी बनता रहा है। कर्मचारी वर्ग को कानूनी हक दिलाने के लिए बार-बार इसके दरवाजे खोले जाते हैं या फिर सारे दांव या कानूनी पेंच अदालत के मार्फत संबोधित किए जाते हैं। पूर्ववर्ती जयराम सरकार ने कर्मचारी कवच को प्रशासनिक ट्रिब्यूनल से उखाड़कर माननीय अदालत के दायरे तक पहुंचा दिया था। उस समय इक्कीस हजार कर्मचारी मामलों का दहेज अदालत के दरवाजे पहुंच गया था और अब फिर कवायद यह कि इस विषय को स्वतंत्र ट्रिब्यूनल के अधीन लाया जाए। दोनों ही तरह के फैसलों के तर्क कर्मचारी वर्ग के लिहाज से महत्त्वपूर्ण रहे हैं, फिर भी हर परिस्थिति के संकट, निर्णयों की गति तथा नए मामलों की प्रगति आड़े आती है। कर्मचारी मामलों के संदर्भ प्रायः ट्रांसफर पालिसी न होने के कारणों से टकराते हैं। वेतन विसंगतियों, स्तरोन्नत होने के मसले तथा कॉडर से संबंधित मामले जब इक_े होते हैं, तो इन्हें निपटाने का दबाव एडियां रगड़ता है। जाहिर है प्रशासनिक ट्रिब्यूनल की स्थापना का उद्देश्य तथा ऐसी पद्धति के कार्यान्वयन से सहजता व सरलता का तकाजा दिखाई देता है, लेकिन व्यावहारिकता के प्रश्न पर कानून के दस्तखत बदल जाते हैं।

वही कानून अदालत की परिपाटी में अपनी परंपरा और निष्पक्षता की दृढ़ता से विश्वास तो पैदा करता है, लेकिन कर्मचारी मामलों के निपटारे समयावधि तय नहीं करते। इसके विपरीत प्रशासनिक ट्रिब्यूनल की सार्थकता में कानून की गतिशीलता व विकेंद्रीयकरण स्पष्ट है। प्रशासनिक ट्रिब्यूनल अपनी परिपाटी में मंडी व धर्मशाला की सर्किट बैंच के जरिए न केवल कर्मचारी वर्ग के नजदीक पहुंचती है, बल्कि न्याय पाने की क्षमता को सहज व सस्ता बनाती है। हिमाचल के परिप्रेक्ष्य में कानूनी ढांचे की यह विसंगति हर पहलू में रही है और इसीलिए हाई कोर्ट की सर्किट या स्थायी खंडपीठ की मांग पिछले चालीस सालों से धर्मशाला के लिए हो रही है। ऐसे में कर्मचारी मामलों की मात्रात्मक अर्जियों को शिमला में हाई कोर्ट का समय व प्राथमिकता नहीं मिल पाती। यह दीगर है कि फैसलों की गुणवत्ता पर प्रश्न उठाते हुए भाजपा की अलग-अलग सरकारों ने कर्मचारियों को हाई कोर्ट का बार-बार विकल्प दिया, लेकिन इक्कीस हजार मामले अगर स्थानांतरित हो जाएं, तो अदालत के लिए इनमें अपनी प्राथमिक भूमिका निभाना कठिन हो जाएगा। ऐसे में फिर एक नए प्रयोग के तहत सुक्खू सरकार ने प्रशासनिक ट्रिब्यूनल के दरवाजे खोलने की इच्छा प्रकट की है। अभी इससे संबंधित प्रक्रिया ने दस्तक दी है और इसे मुकम्मल होने की स्थिति तक कुछ समय का इंतजार रहेगा। दोनों विकल्पों के बावजूद न हाई कोर्ट में मामले घटे और न ही प्रशासनिक ट्रिब्यूनल के रास्ते कर्मचारी मसले कम हुए।

कानून की शरण में कर्मचारियों के लिए सुविधाजनक मानी गए प्रशासनिक ट्रिब्यूनल व्यवस्था के बावजूद निष्कर्ष यही है कि कॉडर-कॉडर, पद-पद और दफ्तर-दफ्तर, कार्य संस्कृति सुधारने से कहीं अधिक दबाव यह है कि हजारों कर्मचारी कानूनी दांव-पेंच तक ही सिमट रहे हैं। पिछले काफी वर्षों से प्रदेश सरकारों ने कर्मचारी मसलों को तरजीह देते हुए उचित-अनुचित के बजाय उनके स्वार्थों को ही पोषित किया। न कभी प्रशासनिक सुधारों पर कोई महत्त्वपूर्ण फैसला हुआ और न ही सरकारी कार्यसंस्कृति में सुधार लाने के गंभीर प्रयास हुए। आश्चर्य यह कि हर साल सैकड़ों ट्रांसफर मामलों की आपत्तियां कानून की शरण पहुंच रही हैं, लेकिन न कोई ठोस स्थानांतरण नियम या नीति बनाने की जहमत उठाई गई और न ही कार्यसंस्कृति को अहमियत मिली। ऐसे में क्या उस आम नागरिक या मतदाता की सरकार से अपेक्षाएं पूरी हो रही हैं।

राय

अंतरिक्ष में नासा के दबदबे को खत्म करने का संकल्प पूरा करने के करीब पहुँच चुका है चाइना

हम आपको यह भी बता दें कि चीन के सरकारी मीडिया ने पिछले साल कहा था कि तियांगोंग पूरी तरह से चालू हो गया है। चीन ने यह भी कहा था कि ऐसे में जबकि आईएसएस अपना जीवनकाल समाप्त होने की ओर बढ़ रहा है तब चीन अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों में कोई ढील नहीं देगा।

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के नेतृत्व वाला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन अपने जीवनकाल के अंत के करीब पहुँच चुका है। ऐसे में अब चीन की नजर अंतरिक्ष का बादशाह बनने पर लग गयी है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को निर्देश दे रखे हैं कि हर हाल में आने वाले समय में चीन को अंतरिक्ष की दुनिया का सरताज बनाना है। इसलिए चीनी अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने अपने प्रयास तेज कर दिये हैं। अजरबैजान के बाकू में आयोजित 74वीं अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष यात्री कांग्रेस में चीन की अंतरिक्ष एजेंसी चाइना एकेडमी ऑफ स्पेस टेक्नोलॉजी (CAST) ने जो कुछ बताया है वह पूरी दुनिया को सावधान करने के लिए काफी है। हम आपको बता दें कि चीन की ओर से कहा गया है कि वह आने वाले वर्षों में अपने अंतरिक्ष स्टेशन को तीन से छह मॉड्यूल तक विस्तारित करने की योजना बना रहा है, जिससे अन्य देशों के अंतरिक्ष यात्रियों को पृथ्वी के निकट वाले मिशनों के लिए एक वैकल्पिक मंच उपलब्ध हो सकेगा। चीन ने कहा है कि चूंकि नासा के नेतृत्व वाला अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) का कार्यकाल समाप्त होने वाला है इसलिए दुनिया को अंतरिक्ष में अपने मिशनों के लिए एक विकल्प की जरूरत है जोकि वह उपलब्ध करायेगा। जरा सोचिये! चीन जब धरती पर रह कर ही दुनिया की इतनी जासूसी करता है तो ऐसे में यदि अंतरिक्ष में उसकी बादशाहत हो गयी तो वह अपना पूरा अमला ही दुनिया की निगरानी करने में लगा देगा।

जहां तक अंतरिक्ष में चीनी स्टेशन की बात है तो उसके बारे में बताया गया है कि चीनी अंतरिक्ष स्टेशन का परिचालन जीवनकाल 15 वर्ष से अधिक होगा। पहले इसका जीवनकाल मात्र 10 वर्षों का ही बताया गया था। हम आपको बता दें कि चीन का स्व-निर्मित अंतरिक्ष स्टेशन, जिसे तियांगोंग या चीनी में सेलेस्टियल पैलेस के रूप में भी जाना जाता है, वह 2022 के अंत से पूरी तरह चालू हो गया है। चीन का अंतरिक्ष स्टेशन 450 किमी (280 मील) की कक्षीय ऊंचाई पर है और अभी यहां अधिकतम तीन अंतरिक्ष यात्री रह सकते हैं। अभी चीन का जो अंतरिक्ष स्टेशन है वह आईएसएस के मुकाबले 40 प्रतिशत ही है क्योंकि नासा के नेतृत्व वाला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन एक साथ सात अंतरिक्ष यात्रियों को संभाल सकता है जबकि चीन का स्टेशन मात्र तीन अंतरिक्ष यात्रियों को ही एक साथ रख सकता है। इसीलिए चीन ने अब अपने अंतरिक्ष स्टेशन के छह मॉड्यूल तक विस्तार की योजना बनाई है। हम आपको बता दें कि दो दशकों से ज्यादा समय से अंतरिक्ष में मौजूद आईएसएस के 2030 के बाद निष्क्रिय होने की उम्मीद है। उससे पहले चीन का प्रयास है कि वह एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति बन जाये। हम आपको यह भी बता दें कि चीन के सरकारी मीडिया ने पिछले साल कहा था कि तियांगोंग पूरी तरह से चालू हो गया है। चीन ने यह भी कहा था कि ऐसे में जबकि आईएसएस अपना जीवनकाल समाप्त होने की ओर बढ़ रहा है तब चीन अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों में कोई ढील नहीं देगा। चीन का यह भी दावा है कि कई देशों ने अपने अंतरिक्ष यात्रियों को चीनी स्टेशन पर भेजने के लिए आग्रह करना शुरू भी कर दिया है।

भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करके ही विश्व में शांति स्थापित हो सकती है

प्रह्लाद सबनानी

आज कई इस्लामी देश भी पश्चिमी सोच की राह पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं कि केवल हमारा धर्म ही श्रेष्ठ है। इस धरा पर जो भी इस्लाम को नहीं मानता हैं वह काफिर है और उसे जीने का हक नहीं हैं। काफिर या तो इस्लाम को कबूल करे अथवा वह मार दिया जाएगा।

आज पूरे विश्व में अशांति एवं अराजकता का माहौल है। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध चल ही रहा था कि हमास और इजराइल के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया है एवं इस युद्ध में लेबनान एवं सीरिया भी कूद पड़े हैं। इधर चीन की विस्तारवादी नीतियों के चलते उसके अपने लगभग सभी पड़ौसी देशों के साथ सम्बंध अच्छे नहीं चल रहे हैं। ताईवान, मंगोलिया, जापान, इंडोनेशिया, फिलिपीन, नेपाल, भूटान, म्यांमार, भारत आदि जैसे शांतिप्रिय देश भी आज चीन की नीतियों से बहुत परेशान हैं। एक तरफ तो विकसित देश अपनी आर्थिक नीतियों के असफल होने के कारण कई प्रकार की आर्थिक एवं सामाजिक परेशानियों से जूझ रहे हैं, तो दूसरी ओर अफ्रीकी महाद्वीप क्षेत्र में कई देश अभी भी आर्थिक विकास को तरस रहे हैं और इन देशों के नागरिक गरीबी का जीवन जीने को मजबूर हैं। कुल मिलाकर पूरे विश्व में ही त्राहि त्राहि मची हुई है। इन समस्त विपरीत परिस्थितियों के बीच आज भारत की आर्थिक विकास दर विश्व की समस्त बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच लगातार सबसे तेज बनी हुई है, क्योंकि भारत आज अपनी सनातन संस्कृति का पालन करते हुए ही आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आदि क्षेत्रों में कार्य करता हुआ दिखाई दे रहा है एवं इसके चलते भारत आज कई क्षेत्रों में पूरे विश्व को राह दिखा रहा है।

वैसे भी किसी भी राष्ट्र के मूल में कुछ तत्व निहित होते हैं, जिनके बल पर वह देश आगे बढ़ता है और समाज के विभिन्न वर्गों को एकता के सूत्र में पिरोए रखता है। भारत के एक राष्ट्र के रूप में, इसके मूल में, सनातन हिंदू संस्कृति का आधार है जो हजारों वर्षों से भारत को आज भी भारत के मूल रूप में ही जीवित रखे हुए है। अन्यथा, पिछले लगभग 1000 वर्षों में भारत को तोड़ने के लिए अरब के आक्रांताओं और अंग्रेजों के द्वारा अनेकानेक प्रयास किए गए हैं। अरब के आक्रांताओं एवं अंग्रेजों ने बहुत अधिक प्रयास किए कि किसी तरह भारतीय मूल संस्कृति को तहस नहस किया जाय, शिक्षा पद्धति को ध्वस्त किया जाये, बलात हिंदुओं का धर्म परिवर्तन किया जाय, आदि आदि। इन प्रयासों में उन्हें कुछ सफलता तो अवश्य मिली परंतु पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति को समाप्त नहीं कर पाए। जबकि कई अन्य देशों (ईरान, लेबनान, इंडोनेशिया, मिस्त्र, ग्रीक आदि) में इनके यही प्रयास पूर्ण रूप से सफल रहे एवं वहां के लगभग सम्पूर्ण नागरिकों को इस्लाम में परिवर्तित करने में वे सफल रहे। भारत में चूंकि सनातन हिंदू धर्म का बोलबाला है अतः यहां इन तत्वों को आज तक सफलता नहीं मिली है हालांकि इनके प्रयास अभी भी जारी हैं।

अंग्रेजों ने जब भारत पर शासन करना प्रारम्भ किया तो उनका अज्ञानतावश यह सोच था कि यहां के नागरिक कुछ जानते ही नहीं है और इनकी विज्ञान के प्रति कोई समझ ही नहीं है। उनकी यह भी सोच थी कि भारत कई राज्यों का एक समूह है और यह एक राष्ट्र नहीं है। अंग्रेज तो यह भी सोचते थे कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं रहा है, ना ही अभी यह एक राष्ट्र है और न ही कभी भविष्य में यह एक राष्ट्र रह पाएगा। क्योंकि यहां तो विभिन्न राजा राज्य करते हैं और उनके राज्यों की अलग अलग भौगोलिक सीमाएं हैं इसलिए भारत का एक राष्ट्र के रूप में कभी अस्तित्व ही नहीं रहा है। अंग्रेज यह भी मानते थे कि पूरे भारत के लोग एक हो जाएंगे यह कभी सम्भव ही नहीं है।

अंग्रेज अहंकारवश भारतीयों को अनपढ़, असभ्य एवं रूढ़िवादी तक कहते थे। उनकी नजरों में भारतीयों की कोई एतिहासिक उपलब्धि नहीं है एवं भारत के बर्बर, जंगली लोगों को सभ्यता सिखाने का दायित्व हमारा (अंग्रेजों का) है। भारत के लोग प्रशासन करने के अयोग्य हैं। किसी कारण से यदि भारत को स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दे दिया तो इस देश की बर्बादी सुनिश्चित है और फिर इसकी जवाबदारी हमारी (अंग्रेजों की) होगी। उनको विशेष रूप से हिंदुओं से बहुत डर लगता था और वे हिंदुओं से सावधान रहने की आवश्यकता पर बल दिया करते थे। उनका सोच था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत बहुत जल्दी बर्बाद हो जाएगा। भारत में लोकतंत्र जीवित नहीं रह सकता, यह बहुत ही अस्वाभाविक राज्य है। भारत आजाद होते ही कई टुकड़ों में बिखर जाएगा क्योंकि यहां 52 करोड़ लोग हैं एवं इनकी अलग अलग भाषाएं हैं ये आपस में लड़ते रहते हैं और कभी भी एक नहीं रह पाएंगे। भारत आजादी के बाद पूरी दुनिया के लिए एक भार बन जाएगा एवं यहां के नागरिक भूख से ही मर जाएंगे। उक्त सोच ब्रिटेन, अमेरिका, लगभग समस्त यूरोपीय देशों सहित कई देशों की भी थी। आज भी आतंकवादी

संगठन एवं विदेशी ताकतें जो भारत को अस्थिर करना चाहते हैं वे इसी परिकल्पना पर अपना कार्य प्रारम्भ करते हैं एवं समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में लड़ाने का प्रयास करते नजर आते हैं।

उक्त वर्णित देशों की यह सोच इसलिए थी क्योंकि उनके पास हिंदू सनातन संस्कृति का कोई ज्ञान नहीं था बल्कि उनकी अपनी पश्चिम रंग में रची बसी सोच थी जो केवल "मैं" में विश्वास करती थी उनके लिए देश मतलब केवल भौगोलिक सीमाओं वाला जमीन का टुकड़ा और उस जमीन के टुकड़े पर रहने वाले लोग ही विशेष हैं। उनके सोच में अहम का भाव कूट कूट कर भरा है। केवल मैं ही श्रेष्ठ हूं। इस दुनिया में रहने वाले बाकी सभी लोग हमसे हीन हैं। जर्मन लोगों ने अपना एक विशेष दर्शन शास्त्र दुनिया के सामने रखा जिसमें उन्होंने किसी और दर्शन को स्वीकार न करते हुए केवल अपने दर्शन को ही श्रेयस्कर माना एवं अहंकार का भाव जाहिर किया। जर्मन, फ्रेंच से भिन्न हैं। यूरोप में प्रत्येक देश ने अपने आप को दूसरे देश से बिलकुल अलग रखा हुआ है। पश्चिम का राष्ट्रवाद एकांतिक है इसमें समावेशिता का नितांत अभाव है। इसीलिए आज रूस, यूक्रेन के साथ लड़ रहा है तो जर्मनी की फ्रांस के साथ नहीं बनती है। इसी प्रकार यूरोप के लगभग सभी देशों के आपसी विचारों में किसी न किसी प्रकार की भिन्नता दृष्टिगोचर होती रहती है। जबकि यह लगभग सभी देश ईसाई धर्म को मानने वाले देश हैं।

आज कई इस्लामी देश भी पश्चिमी सोच की राह पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं कि केवल हमारा धर्म ही श्रेष्ठ है। इस धरा पर जो भी इस्लाम को नहीं मानता हैं वह काफिर है और उसे जीने का हक नहीं हैं। काफिर या तो इस्लाम को कबूल करे अथवा वह मार दिया जाएगा। और तो और इस्लामी देशों में भी अलग अलग किस्म के कई फिर्के आपस में ही लड़ते झगड़ते रहते हैं एवं एक दूसरे को अपने से श्रेष्ठ सिद्ध करने की कोशिश में लगे रहते हैं।

जबकि भारतीय विचारधारा इसके ठीक विपरीत आचरण करना सिखाती है विशेष रूप से सनातन संस्कृति में जो व्यक्ति जितना विशेष होगा वह उतना ही विनयपूर्ण होगा और इस नाते भारतीय सनातन संस्कृति अविभाजनकारी दर्शन पर चलकर सर्वसमावेशी है। इसमें ईश्वरीय भाव जाहिर होता है। जो मेरे अंदर है वही आपके अंदर भी है अर्थात मुझमें भी ईश्वर है और आपमें भी ईश्वर का वास है। इस प्रकार प्रत्येक भारतीय, चाहे वह किसी भी जाति का हो, किसी भी मत, पंथ को मानने वाला हो, अपने आप को भारत माता का सपूत कहने में गर्व का अनुभव करता है। और, इसलिए भारतीय सनातन संस्कृति अन्य संस्कृतियों को भी अपने आप में आत्मसात करने की क्षमता रखती है। इतिहास में इस प्रकार के कई उदाहरण दिखाई देते हैं। जैसे पारसी आज अपने मूल देश में नहीं बच पाए हैं लेकिन भारत में वे रच बस गए हैं। इसी प्रकार इस्लाम धर्म को मानने वाले लगभग सभी फिर्के भारत में निवास करते हैं जबकि विश्व के कई इस्लामी देशों में केवल एक विशेष प्रकार के फिरके पाए जाते हैं।

भारतीय चिंतन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार स्तंभों पर स्थापित है। इस दृष्टि से चाहे व्यक्ति हो, परिवार हो, देश यो अथवा विश्व हो, किसी के भी विषय में चिंतन का आधार एकांगी न मानकर एकात्म माना जाता है। भारत के उपनिषदों, वेदों, ग्रंथों में भी यह बताया गया है कि मनुष्य का जीवन अच्छे कर्मों को करने के लिए मिलता है एवं देवता भी मनुष्य के जीवन को प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। अच्छे कर्म कर मनुष्य अपना उद्धार कर सकता है इसीलिए भारतीय धरा को कर्मभूमि माना गया है जबकि अन्य देशों की धराओं को भोगभूमि कहा गया है। अन्य धर्म, भोग को बढ़ावा देते हैं जबकि हिंदू सनातन संस्कृति योग को बढ़ावा देती है। इस प्रकार हिंदू धर्म के शास्त्रों, पुराणों एवं वेदों में किसी भी जीव के दिल को दुखाने अथवा उसकी हत्या को निषिद्ध बताया गया है जबकि अन्य धर्म के शास्त्रों में इस प्रकार की बातों का वर्णन नहीं मिलता है। इसी कारण के चलते हिंदू धर्म को मानने वाले अनुयायी बहुत कोमल स्वभाव एवं पूरे विश्व में निवास कर रहे प्राणियों को अपने कुटुंब का सदस्य मानने वाले होते हैं। बचपन में ही इस प्रकार की शिक्षाएं हमारे बुजुर्गों द्वारा प्रदान की जाती हैं।

भारतीय संस्कृति में एकात्मता का सोच है। भारत पूरे विश्व की मंगल कामना करता है एवं "वसुधैव कुटुम्बकम", "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय", जैसे सिद्धांतों पर विश्वास करता है। चाहे किसी भी व्यक्ति की कोई भी पूजा पद्धति क्यों न हो, पूरे भारत में एक जैसा हिंदू दर्शन है। हिंदू दर्शन ही भारत में राष्ट्र तत्व है जो पश्चिम की सोच से अलग है। हिंदू दर्शन एक मौलिक दर्शन है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, अंग्रेजों एवं अन्य कई देशों की सोच के ठीक विपरीत, विभिन्न मत, पंथों को मानने वाले भारतीय 26 विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं के साथ न केवल सफलतापूर्वक एक दूसरे के साथ तालमेल बिठाकर आनंद में रह रहे हैं बल्कि आज भारतीय लोकतंत्र पूरे विश्व में सबसे बड़े मजबूत लोकतंत्र के रूप में अपना स्थान बना चुका है। यह केवल सनातन हिंदू संस्कृति के कारण ही सम्भव हो सका है। सनातन हिंदू संस्कृति में एकात्मता का भाव मुख्य रूप से झलकता है। अतः वर्तमान में आतंकवादियों एवं अन्य कई देशों द्वारा पूरे विश्व में अस्थिरता फैलाने के जो प्रयास किए जा रहे हैं उन्हें भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति के दर्शन को अपनाकर ही पूर्णतः दबाया जा सकता है। वैसे हाल ही के समय में कई देशों यथा- जापान, रूस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, इंडोनेशिया आदि आदि में भारतीय संस्कृति के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है।

अब तो विश्व के कई विकसित देशों को भी यह आभास होने लगा है कि भारतीय सनातन संस्कृति इस धरा पर सबसे पुरानी संस्कृतियों में एक है और भारतीय वेदों, पुराणों एवं पुरातन ग्रंथों में लिखी गई बातें कई मायनों में सही पाई जा रही हैं। इन पर विश्व के कई बड़े बड़े विश्वविद्यालयों में शोध किए जाने के बाद ही यह तथ्य सामने आ रहे है। अतः कई देशों को अब यह आभास होने लगा है कि भारतीय सनातन संस्कृति को अपनाकर ही विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है।

अप्रैल से अक्टूबर के बीच बिजली की मांग 9.4 प्रतिशत बढ़कर हुई 984.39 बिलियन यूनिट, उर्जा मंत्रालय ने जारी किए आंकड़े

ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-अक्टूबर अवधि के दौरान भारत की बिजली खपत सालाना आधार पर 9.4 प्रतिशत बढ़कर लगभग 984.39 बिलियन यूनिट हो गई। बिजली की खपत बढ़ने का मुख्य कारण आर्थिक गतिविधियों में सुधार है। एक साल पहले इसी अवधि में बिजली की खपत 899.95 बिलियन यूनिट थी।

नई दिल्ली। बिजली मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक चालू वित्त के अप्रैल से अक्टूबर तक में भारत की बिजली खपत एक साल पहले की तुलना में 9.4 प्रतिशत बढ़कर लगभग 984.39 बिलियन यूनिट हो गई है।

बिजली की खपत बढ़ने का मुख्य कारण आर्थिक गतिविधियों में सुधार का होना है। एक साल पहले की समान अवधि में बिजली की खपत 899.95 बिलियन यूनिट थी।

पीक पावर डिमांड भी बढ़ा

एक अन्य संकेतक, पीक पावर डिमांड, की बात करें तो अप्रैल-अक्टूबर अवधि के दौरान पीक पावर डिमांड लगभग 241 गीगावॉट से अधिक थी, जो 2022 की समान अवधि में 215.88 गीगावॉट थी।

पिछले महीने कितनी थी डिमांड?

पिछले महीने अक्टूबर में देश की बिजली खपत त्योहारों और बढ़ी हुई आर्थिक गतिविधियों के कारण बिजली की मांग में वृद्धि के कारण लगभग 22 प्रतिशत बढ़कर 138.94 बिलियन यूनिट (बीयू) हो गई थी।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, एक साल पहले इसी महीने में बिजली की खपत 113.94 बीयू थी, जो अक्टूबर 2021 में दर्ज 112.79 बिलियन यूनिट से अधिक है।

पीटीआई को टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड के एक प्रवक्ता ने कहा कि पिछले कुछ महीनों में बिजली की खपत काफी बढ़ गई है। अक्टूबर 2023 में, टाटा पावर-दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड के परिचालन क्षेत्र में बिजली की खपत लगभग 10.16 प्रतिशत बढ़कर 845 एमयू (मिलियन यूनिट) हो गई, जबकि अक्टूबर 2022 में यह 767 एमयू थी।

गर्मियों में 229 गीगावॉट तक मांग पहुंचने की उम्मीद

उर्जा मंत्रालय के अनुमान के मुताबिक गर्मियों के दौरान देश में बिजली की मांग 229 गीगावॉट तक पहुंच सकती है। हालांकि, अधिकतम आपूर्ति जून में 224.1 गीगावॉट की नई ऊंचाई को छू चूकी है, लेकिन जुलाई में गिरकर 209.03 गीगावॉट पर आ गई।

अगस्त में अधिकतम मांग 238.19 गीगावॉट तक पहुंच गई। इस साल सितंबर में यह लगभग 241 गीगावॉट थी। अगस्त और सितंबर में बिजली की खपत बढ़ने का मुख्य कारण उमस भरा मौसम और त्योहारी सीजन से पहले औद्योगिक गतिविधियों का बढ़ना भी है।

लोन और डिपॉजिट के मामले में सितंबर तिमाही में बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने किया टॉप, जानिए कितना बढ़ा डिपॉजिट

देश के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक बैंक ऑफ महाराष्ट्र (बीओएम) चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में ऋण और जमा अनुपात के मामले में सभी पीएसयू बैंकों में शीर्ष स्थान पर है। बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने जुलाई-सितंबर के दौरान जमा और ऋण में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की है।

नई दिल्ली। देश के सरकारी बैंकों में से एक बैंक ऑफ महाराष्ट्र (बीओएम) ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के दौरान लोन और डिपॉजिट में प्रतिशत के संदर्भ में बाकी सभी पीएसयू बैंकों में पहला स्थान प्राप्त किया है।

कितना बढ़ा डिपॉजिट?

बैंक ऑफ महाराष्ट्र के जमा और एडवांस में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई, जो जुलाई-सितंबर की अवधि के दौरान किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक द्वारा सबसे अधिक है।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, बैंक ऑफ महाराष्ट्र (बीओएम) का एडवांस सितंबर तिमाही में 23.55 प्रतिशत बढ़कर 1,83,122 करोड़ रुपये हो गया।

लिस्ट में और किस बैंक का नाम शामिल?

20.29 प्रतिशत की वृद्धि के साथ इंडियन ओवरसीज बैंक, 17.26 प्रतिशत की वृद्धि के साथ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया और 16.53 प्रतिशत की वृद्धि के साथ यूको बैंक का नाम शामिल है।

वहीं भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) घरेलू एडवांस ग्रोथ में 13.21 प्रतिशत की वृद्धि के साथ सातवें स्थान पर रहा। हालांकि एसबीआई का कुल लोन बीओएम के 1,75,676 करोड़ रुपये की तुलना में लगभग 16 गुना अधिक यानी 28,84,007 करोड़ रुपये था।

डिपॉजिट ग्रोथ की बात करें तो बीओएम का जमा वृद्धि के संबंध में, बीओएम में 22.18 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई और सितंबर 2023 के अंत में 2,39,298 करोड़ रुपये जुटाए गए।

प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार, जमा में 12 प्रतिशत की वृद्धि (10,74,114 करोड़ रुपये) के साथ बैंक ऑफ बड़ौदा दूसरे स्थान पर था, जबकि एसबीआई ने 11.80 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 45,03,340 करोड़ रुपये दर्ज की।

जमा राशि में बीओएम टॉप

कम लागत पर चालू खाता और बचत खाता (CASA) जमा राशि जुटाने के मामले में BoM ने 50.71 प्रतिशत के साथ शीर्ष स्थान बरकरार है, दूसरे नंबर पर सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया 49.93 प्रतिशत के साथ मौजूद है।

22 प्रतिशत के अधिक बढ़ा कारोबार

लोन और जमा में उच्च वृद्धि के कारण, बैंक के कुल कारोबार में भी 22.77 प्रतिशत की उच्चतम वृद्धि दर्ज की गई, जो 4,22,420 करोड़ रुपये थी, इसके बाद बैंक ऑफ बड़ौदा ने 13.91 प्रतिशत की वृद्धि (19,08,837 करोड़ रुपये) दर्ज की।

इनसाइड

दिवाली पर जाना है घर और महंगी पड़ रही है टिकट, Paytm के ये Money Saving टिप्स आएंगे आपके काम

त्यौहारों के आने के साथ ही बाहर काम करने वाले या पढ़ने वाले लोगों का यही प्लान होता है कि वह अपने घर कैसे जाएं। इसके लिए सबसे पहला काम टिकट बुक करना है। इस समय में टिकट बुक कराना अक्सर मंहगा पड़ जाता है। ऐसे में हम आपको कुछ टिप्स देंगे जो आपको टिकट बुक करने के दौरान पैसे बचाने आसान ट्रेवलिंग में मदद करेगा।

नई दिल्ली। कुछ दिनों में दिवाली का त्यौहार है, ऐसे में बहुत से लोग अपने घर जाने की तैयारी करते हैं। इसके अलावा कुछ लोग ऐसे भी है, जो कहीं बाहर घुमने का प्लान बना रहे हैं। ऐसे में टिकट बुक करना सबसे बड़ा मसला है, क्योंकि ये मंहगा पड़ता है।

Paytm अपने कस्टमर्स के लिए एक विकल्प लाया है, जिसमें आपको किफायती ट्रेवलिंग डील मिलती है। ये आपको बेतहर टिकट बुकिंग ऑप्शन देता है। कंपनी की मानें तो यह एक वन-स्टेप सॉल्यूशन है, जो आपको इस तरह के फायदें देता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि Paytm ने बेहतर एक्सपीरियंस के देने के लिए कंपनी ने IRCTC के साथ पार्टनरशिप किया है। इसकी वजह से इस प्लेटफॉर्म से टिकट को बुक करने से कई फायदें मिलते हैं, जिसमें फ्री कैंसिलेशन, 100% रिफल्ड, ट्रैवल इंश्योरेंस इजी और तेज बुकिंग, कैशबैक और 24X7 कस्टमर सर्विस जैसे कई फायदें है। आइये इनके बारे में जानते हैं।

कैसे प्लान करें ट्रिप्स

बस बुकिंग में मिलेगा डिस्काउंट

अगर आप Paytm से बस टिकट बुक कर रहे हैं तो इसने आपके लिए 500 रुपये का ऑफ दे रही है, लेकिन इसके लिए आपको प्लेटफॉर्म से ही टिकट बुक करना होगा।

लाइव बस ट्रेकिंग

इसकी मदद से आपको आसानी से बस को ट्रैक कर सकते हैं। यह सुविधा आपको पेटीएम पर ही मिलती है। इसके अलावा कंपनी ने बेस्ट प्राइज गारेंटी फीचर का वादा करती है। साथ ही पेटीएम पर आपको 2500 बस का ऑप्शन मिलता है।

ईजी कैंसिलेशन

इसके अलावा कंपनी आपको ईजी कैंसिलेशन का भी विकल्प देती है। इसकी मदद से आप अपनी ट्रेन के शुरू होने से 6 घंटे पहले टिकट को कैंसिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको इस्टेंट डिस्काउंट मिल सकता है। इतना ही नहीं आप तत्काल टिकट भी बुक कर सकता है।

पेमेंट गेटवे का नहीं लगेगा चार्ज

इसमें आपको अलावा आपको बिना किसी पेमेंट गेटवे के टिकट बुक करने की सुविधा मिलती है। साथ ही आप ट्रेन की आनलॉइन ट्रेकिंग भी कर सकते हैं।

आईसीआईसीआई बैंक के ग्राहक अब डिजिटल रुपी में कर पाएंगे ट्रांजैक्शन, जानिए क्या है प्रोसेस

आईसीआईसीआई बैंक ने कहा कि उसके ग्राहक अब किसी भी व्यापारी के क्यूआर कोड को स्कैन करके डिजिटल रुपये का लेनदेन कर सकेंगे। यूपीआई के सहयोग से बैंक ने ग्राहकों को व्यापारी के क्यूआर कोड को स्कैन करके डिजिटल रुपये लेनदेन करने में सक्षम बनाया है।

नई दिल्ली। बड़े निजी बैंको में से एक आईसीआईसीआई बैंक के ग्राहकों अब डिजिटल रुपी के जरिए ट्रांजैक्शन कर करने की सुविधा दी है।

आईसीआईसीआई बैंक ने बताया कि बैंक के ग्राहक अब डिजिटल रुपया का इस्तेमाल कर किसी भी मर्चेंट के QR कोड को स्कैन कर ट्रांजैक्शन कर पाएंगे।

क्या है ऐप का नाम?

डिजिटल रुपी के जरिए ट्रांजैक्शन करने के लिए आईसीआईसीआई बैंक के ग्राहको को 'Digital Rupee by ICICI Bank' का ऐप डाउनलोड करना होगा। बैंक ने यूपीआई के सहयोग से ग्राहकों को यह सुविधा दी है कि ग्राहक मर्चेंट के QR कोड को स्कैन कर डिजिटल रुपी से ट्रांजैक्शन कर पाएंगे।

मर्चेंट के पास डिजिल रुपी ऐप होने की जरूरत नहीं

आपको बता दें कि जरूरी नहीं कि आप जिस मर्चेंट का QR कोड का इस्तेमाल कर पेमेंट कर रहे हैं, उस मर्चेंट के पास आपकी तरह डिजिटल रुपी ऐप हो लेकिन फिर भी वो मर्चेंट डिजिटल रुपी में पेमेंट प्राप्त कर सकता है।

दिसंबर 2022 में शुरू हुआ था पायलट प्रोजेक्ट

आरबीआई ने आईसीआईसीआई बैंक को दिसंबर 2022 में डिजिटल मुद्रा कि पायलट परियोजना में भाग लेने के लिए चुना था। आईसीआईसीआई बैंक की यह सुविधा देश के 80 शहरों में उपलब्ध है।

'Digital Rupee by ICICI Bank' ऐप के जरिए कैसे करें पेमेंट?

सबसे पहले अपने प्ले या ऐप स्टोर से 'Digital Rupee by ICICI Bank' ऐप को इंस्टोल कर, लॉग इन कर लें।

इसके बाद स्कैन QR ऑप्शन को क्लिक कर मर्चेंट के यूपीआई QR कोड को स्कैन करें।

इसके बाद अमाउंट दर पिन दर्ज करें।

पिन डालने के बाद आपके ट्रांजैक्शन पूरा हो जाएगा।

सेविंग अकाउंट से यूजर्स डिजिटल वॉलेट में डाल सकते हैं पैसे

'Digital Rupee by ICICI Bank' ऐप यूजर्स को उनके बचत खाते से अपना डिजिटल वॉलेट लोड करने की सुविधा प्रदान करता है। जहां वो दूसरों को पैसे ट्रांसफर या भुगतान भी कर सकते हैं। जब वॉलेट का बैलेंस कम हो जाता है तो ऐप ग्राहक के बचत खाते से स्वचालित रूप से वॉलेट में पैसे एड कर देता है।

आधार कार्ड में इस जानकारी को सिर्फ एक ही बार कर सकते हैं चेंज जानिए पूरी डिटेल

आज के समय में आधार कार्ड हमारी पहचान के तौर पर काम करता है। छोटे से लेकर बड़े कामों के लिए आधार कार्ड की जरूरत होती है। अगर आपका आधार कार्ड में कोई गलत जानकारी हो जाती है तो आप उसे अपडेट कर सकते हैं। आप केवल कुछ जानकारी केवल एक बार ही अपडेट कर सकते हैं।

नई दिल्लीः आधार कार्ड आईडी-प्रूफ के तौर पर काम करता है। यह व्यक्ति के पहचान के तौर पर गैर सरकारी के साथ सरकारी कामों के लिए भी इसका इस्तेमाल करते हैं। हालांकि, कई बार हमें आधार में दी जा रही जानकारी को अपडेट करना होता है। इन जानकारी को चेंज करने की एक सीमा है। आइए, जानते हैं कि आप किस जानकारी को कितना बदल सकते हैं।

एक बार होता है बदलाव

आधार कार्ड पर आप लिंग और डेट ऑफ बर्थ को केवल एक बार ही बदल सकते हैं। वहीं नाम को केवल दो बार ही चेंज किया जाता है। वहीं आधार कार्ड में घर का पटा आप की बार बदल सकते हैं। घर का पता बदलने के लिए आपको पासपोर्ट, राशन कार्ड या कोई और एड्रेस प्रूफ देना होगा। आप यह सभी जानकारी आप ऑनलाइन भी अपडेट कर सकते हैं।

तीन बार बदल सकते हैं यह जानकारी

अगर आप अपना नाम तीसरी बार चेंज करवाते हैं तो आपको उसके लिए आधार केंद्र जाना होगा। कई बार नाम अपडेट करने के लिए आपको यूआईडीएआई के क्षेत्रीय कार्यालय में जाकर परमिशन लेना होगा।

आधार कार्ड काफी जरूरी डॉक्यूमेंट हैं। आपको अपनी आधार कार्ड की जानकारी को किसी भी अनजान व्यक्ति को नहीं देना चाहिए। इसके अलावा आपको सावधानी बरतनी भी चाहिए। आजकल आधार कार्ड के जरिये कई तरह के फ्रॉड होते हैं। इन फ्रॉड से बचने के लिए आपको अपनी आधार की जानकारी कभी भी किसी व्यक्ति को नहीं देना चाहिए था। इसके अलावा आप अपने मोबाइल पर आए आधार ओटीपी भी किसी अनजान व्यक्ति को ना भेजें। अगर आप ऐसा करते हैं तो आपके साथ फ्रॉड हो सकता है।

10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से 9 कंपनियों का बढ़ा एमकैप, रिलायंस ने किया टॉप

पिछले हफ्ते में दस में से नौ कंपनियों के एम-कैप में बाजार पूंजीकरण के हिसाब से बढ़ोतरी हुई। पिछले सप्ताह इन सभी नौ कंपनियों का संयुक्त एमकैप 97463.46 करोड़ रुपये बढ़ा। इन कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज का एमकैप सबसे ज्यादा बढ़ा है। जानिए किस कंपनी का कितना बढ़ा एमकैप।

नई दिल्ली। पिछले कारोबारी हफ्ते में शेयर बाजार की दस सबसे मूल्यवांन कंपनियों में से नौ कंपनियों के M-Cap में वृद्धि हुई है। इन सभी नौ कंपनियों का संयुक्त एमकैप पिछले सप्ताह 97,463.46 करोड़ रुपये बढ़ा है। इन सभी कंपनियों के एमकैप में से सबसे अधिक बढ़ोतरी रिलायंस इंडस्ट्री के एमकैप में हुई है।

पिछले हफ्ते कितना उछला था सेंसेक्स?

पिछले हफ्ते बीएसई बेंचमार्क 580.98 अंक या 0.91 फीसदी उछला था। बजाज फाइनेंस को छोड़कर, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और भारतीय स्टेट बैंक सहित बाकी नौ कंपनियां टॉप गेनर रहे।

किस कंपनी का कितना बढ़ा एमकैप?

पिछले कारोबारी हफ्ते रिलायंस का एमकैप 36,399.36 करोड़ रुपये बढ़कर 15,68,995.24 करोड़ रुपये हो गया। इसके अलावा भारतीय स्टेट बैंक का एमकैप 15,305.71 करोड़ रुपये बढ़कर 5,15,976.44 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

आईसीआईसीआई बैंक के शेयर 14,749.52 करोड़ रुपये बढ़कर 6,54,042.46 करोड़ रुपये और एचडीएफसी बैंक का मूल्यांकन 11,657.11 करोड़ रुपये बढ़कर 11,25,842.89 करोड़ रुपये हो गया।

भारती एयरटेल का एमकैप 9,352.15 करोड़ रुपये बढ़कर 5,23,087.22 करोड़ रुपये और हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड का एमकैप 6,320.4 करोड़ रुपये बढ़कर 5,89,418.46 करोड़ रुपये हो गया। इंफोसिस का एमकैप 3,507.08 करोड़ रुपये बढ़कर 5,76,529.86 करोड़ रुपये हो गया।

टाटा ग्रुप की टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मूल्यांकन 109.77 करोड़ रुपये बढ़कर 12,26,093.23 करोड़ रुपये और आईटीसी का 62.36 करोड़ रुपये बढ़कर 5,40,699.70 करोड़ रुपये हो गया। हालांकि, बजाज फाइनेंस का एमकैप 5,210.91 करोड़ रुपये घटकर 4,49,604.04 करोड़ रुपये रह गया।

कौन से रही टॉप 10 कंपनी?

रिलायंस इंडस्ट्रीज को पहला स्थान मिला इसके बाद दूसरे स्थान पर टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, इंफोसिस, आईटीसी, भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक और बजाज फाइनेंस रहे।

नवंबर में भी एफपीआई ने जारी रखी बिकवाली, पहले तीन कारोबारी सत्र में बेचे 3400 करोड़ रुपये से अधिक के शेयर

नई दिल्ली। नवंबर महीने के पहले तीन कारोबारी सत्र में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने पहले की तरह शेयर बाजार से बिकवाली जारी रखी है। 1,2 और 3 नंवबर के कारोबारी सत्र में एफपीआई ने 3,400 करोड़ रुपये से अधिक की निकासी की है।

पिछले महीने कितने करोड़ की कि निकासी

इससे पहले के महीनों की बात करें तो अक्टूबर में एफपीआई ने कुल 24,548 करोड़ रुपये और सितंबर में कुल 14,767 करोड़ रुपये की निकासी की है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के मुताबिक, 1-3 नवंबर के दौरान एफपीआई ने 3,412 करोड़ रुपये के शेयर बेचे। सितंबर की शुरुआत से ही एफपीआई बिकवाली कर रहे हैं। हालांकि निकासी से पहले, एफपीआई ने मार्च से अगस्त तक पिछले छह महीनों में शेयर बाजारों में लगातार खरीदी कर रहे थे और इस दौरान एफपीआई ने करीब 1.74 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया था।

एफपीआई क्यों कर रहे हैं बिकवाली?

विशेषज्ञों की माने तो बिकवाली के पीछे मुख्य कारण इजरायल और हमास के बीच चल रहे युद्ध और अमेरिकी बॉन्ड यील्ड हैं। समाचार एजेंसी पीटीआई को मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट एडवाइजर इंडिया के एसोसिएट डायरेक्टर - मैनेजर रिसर्च, हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा कि इसका मुख्य कारण इजरायल और हमास के बीच संघर्ष के कारण बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के साथ-साथ अमेरिकी ट्रेजरी बांड पैदावार में उल्लेखनीय वृद्धि है। बढ़ती बॉन्ड यील्ड और अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा नवंबर की बैठक में नरम रुख का संकेत देने के बाद अब भारतीय शेयर बाजार से एफपीआई के अधिक निकासी की संभावना कम है।

जिसने दुनिया नहीं देखी, वो भी झेल रहा जहरीली हवा का दंश

गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए सबसे बड़ा खतरा है वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण राजनीति के लिए वोट का विषय हो सकता है लेकिन इसका दुष्परिणाम वो भी झेल रहा है जिसने दुनिया देखी ही नहीं है। अनुमानित आंकड़े के अनुसार राजधानी में प्रति वर्ष औसतन सवा तीन लाख गर्भवती की संख्या है। फिलहाल दिल्ली में 400 से अधिक एक्यूआइ है। ऐसी स्थिति में बच्चे को गर्भ में बचाना डॉक्टरों के लिए चुनौती से कम नहीं है।

नई दिल्ली। वायु प्रदूषण राजनीति के लिए वोट का विषय हो सकता है, लेकिन इसका दुष्परिणाम वो भी झेल रहा है जिसने दुनिया देखी ही नहीं है। गैस चेंबर बनी राष्ट्रीय राजधानी में हजारों गर्भवती इसी में सांस ले रहीं हैं और यह जहरीली हवा गर्भ में पल रहे बच्चे तक जा रही है।

तमाम पोषण और आहार के बीच प्रदूषित हवा उन बच्चों के लिए बेहद खतरनाक है। पहले तो उनका जन्म लेना कठिन है और जन्म लिया भी तो जीवन भर की स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयां उनकी आगे की राह में रोड़ा बन सकती हैं।

फिलहाल दिल्ली में एक्यूआई 400 से अधिक है।

अनुमानित आंकड़े के अनुसार राजधानी में प्रति वर्ष औसतन सवा तीन लाख गर्भवती की संख्या है। फिलहाल दिल्ली में 400 से अधिक एक्यूआइ है। ऐसी स्थिति में बच्चे को गर्भ में बचाना डॉक्टरों के लिए चुनौती से कम नहीं है।

वसंत कुंज स्थित फोर्टिज अस्पताल के प्रधान निदेशक और बाल व नवजात विशेषज्ञ डा. राहुल नागपाल ने बताया कि गर्भवती के लिए वायु प्रदूषण बेहद नुकसानदायक है। ऐसी स्थिति में गर्भवती जब सांस लेती है तो वह जहीरीली हवा महिला के पेट में पल रह बच्चे को नुकसान पहुंचाती है।

वायु प्रदूषण मां और बच्चे को जोड़ने वाली गर्भनाल को क्षतिग्रस्त करके भ्रूण तक को नुकसान करता है। दरअसल, गर्भवती मां जो भी खाती है वह सीधा बच्चा भी ग्रहण करता है। उन्होंने बताया कि गर्भवती महिलाओं में वायु प्रदूषण के कारण प्री-मेच्योर डिलीवरी का खतरा भी रहता है। कुछ मामलों में गर्भ में पल रहा बच्चा सांस संबंधी बिमारियों से भी पीड़ित हो सकता है।

मृत्यु दर बढ़ने की आशंका

क्लाउड नाइन अस्पताल के बालरोग विशेषज्ञ डॉ. विनय राय बताया कि गर्भवती के ऐसी हवा में सांस लेने से बच्चे की वृद्धि कम हो जाती है। यहां तक की बच्चे में जेनेटिक बदलाव भी आ सकते हैं। इतना ही नहीं यह पीढ़ी दर पीढ़ी ट्रांसफर होगा। उसकी प्रजनन क्षमता भी प्रभावित होगी। चूंकि टॉक्सिन का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, ऐसे में मृत्यु दर बढ़ेगी।

पाक और बांग्लादेश में हर साल हो रहे 3 लाख 49 हजार गर्भपात

करीब चार साल पहले लैंसेट जर्नल में प्रकाशित रिसर्च रिपोर्ट में सामने आया था कि वायु प्रदूषण का गर्भपात से सीधा संबंध है। दिल्ली-एनसीआर में समेत देशभर में वायु गुणवत्ता स्तर को सुधार लें तो 7 प्रतिशत तक प्रेगनेंसी लास को रोका जा सकता है। वायु प्रदूषण के प्रभाव के चलते भारत के साथ पड़ोसी देश पाकिस्तान और बांग्लादेश में प्रत्येक वर्ष 3.49 लाख गर्भपात हो रहे हैं।

पिछले चार वर्ष में शिशु मृत्यु दर

वर्ष	शिशुओं की मौतें	शिशु मृत्यु दर
2019-	8823	24.12
2020-	6145	20.37
2021-	6413	23.60

नांगलोई स्टेशन पर अचानक अचेत होकर गिरा शख्स, CISF के जवान ने ऐसे बचाई जान

नांगलोई मेट्रो स्टेशन पर एक शख्स को सीआईएसएफ के जवान ने सीपीआर देकर उसकी जिंदगी बचा ली। शख्स ने जैसे ही मेट्रो में एंट्री ली तभी वह अचेत हो गया। वहां तैनात कॉन्स्टेबल उत्तम कुमार ने तत्काल सीपीआर देना शुरू किया। इससे उनकी जान बच गई। उन्हें बाद में नजदीकी अस्पताल में ले जाया गया।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के एक जवान ने एक शख्स की जिंदगी बचा ली। दरअसल, 58 साल के एक बुजुर्ग मेट्रो स्टेशन पर अचेत हो गए। जैसे ही इसकी जानकारी मिली, तभी सीआईएसएफ के जवान ने उस शख्स को तत्काल सीपीआर दिया। इससे उनकी जान बच गई। घटना शनिवार को साढ़े 12 बजे नांगलोई मेट्रो स्टेशन पर घटी।

अधिकारियों ने बताया कि स्टेशन में एंट्री लेते वक्त शख्स की जांच की जा रही थी, तभी वह बेहोशी जैसा महसूस करने लगे। ड्यूटी पर तैनात सीआईएसएफ कॉन्स्टेबल उत्तम कुमार ने इसे तत्काल भांप लिया और उन्होंने शख्स को तुरंत सीपीआर देना शुरू किया। इसके बाद उन्हें होश आ गया।

CISF के जवान पहले भी कर चुके हैं ऐसे काम

शख्स को आगे की इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। उनके परिवार को भी इस घटना की सूचना दी गई। बता दें, सीपीआर वह तकनीक है, जब किसी का हार्ट काम करना बंद कर देता है, तब सीपीआर के जरिए उनकी जिंदगी को बचाया जा सकता है। मेट्रो में पहले भी सीआईएसएफ के द्वारा इस तरह के सराहनीय कार्य किए जा चुके हैं।

ओवर स्पीड से देश में होते हैं सबसे ज्यादा हादसे, किन तरीकों से रहें सुरक्षित, जानें डिटेल

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में बड़ी संख्या में सड़क हादसे तेज स्पीड के कारण होते हैं। ऐसे हादसों से किस तरह बचा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक देश में बड़ी संख्या में सड़क हादसे तेज स्पीड में वाहन चलाने से होते हैं। हम इस खबर में आपको ऐसे टिप्स की जानकारी दे रहे हैं, जिनको ध्यान में रखते हुए वाहन चलाने पर सड़क हादसों से बचा जा सकता है।

सड़क का रखें ध्यान

जब भी सड़क पर वाहन चलाएं तो हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सड़क से ध्यान ना भटके। कुछ लोग वाहन चलाते हुए फोन, जीपीएस का उपयोग सहित ऐसे काम करते हैं, जिससे ध्यान भटक जाता है। ऐसे में सड़क दुर्घटना का खतरा भी बढ़ जाता है।

वाहन का रखें ध्यान

सड़क पर वाहन चलाने के साथ ही वाहन का ध्यान रखना भी जरूरी होता है। हमेशा सफर के पहले वाहन की जांच करनी चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वाहन बिल्कुल फिट हो। ऐसा ना होने पर भी हादसे का खतरा काफी ज्यादा बढ़ जाता है।

नियमों का पालन करना जरूरी

सड़क पर सुरक्षित रहने के लिए नियमों का पालन करना भी काफी जरूरी होता है। कई बार तेज स्पीड में वाहन चलाने पर नियमों को तोड़ा जाता है। जिसके कारण हादसा होने का खतरा बढ़ जाता है। इसके साथ ही पुलिस की ओर से कार्रवाई भी की जा सकती है। इसलिए कोशिश करें कि तय सीमा में ही वाहन को चलाएं।

ना करें जल्दी

सड़क पर वाहन चलाते हुए कभी भी जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से कई बार भूल हो जाती है और गलती होने का खतरा भी बढ़ जाता है। कभी भी वाहन चलाते हुए ओवरटेक करने में भी जल्दबाजी नहीं करें।

कांग्रेस ने जारी किया घोषणा पत्र, किसानों पर लगाया बड़ा दांव, पढ़िए बड़े वादे

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने घोषणा पत्र जारी कर दिया है। प्रदेश की जनता को लुभाने के लिए कांग्रेस ने कई बड़े वादे किए गए हैं। कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ की जनता के लिए वादों की झड़ी लगा दी है।

नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने घोषणा पत्र जारी कर दिया है। प्रदेश की जनता को लुभाने के लिए कांग्रेस ने कई बड़े वादे किए गए हैं। कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ की जनता के लिए वादों की झड़ी लगा दी है। कांग्रेस ने प्रदेश की जनता से जो वादे किए हैं उनमें मुफ्त बिजली, धान खरीदी को लेकर बड़ा फैसला और तेंदूपत्ता कारोबारियों के लिए भी बड़ा वादा शामिल है।

कांग्रेस ने घोषणा पत्र में एक बार फिर से कर्ज माफी का वादा किया है। साथ ही कांग्रेस ने कहा है कि प्रदेश में सभी सरकारी स्कूल और कॉलेज में केजी से लेकर पीजी तक की पढ़ाई फ्री में होगी। 500 रुपए में गैस सिलेंडर मिलेगा। इसके साथ ही राजीव गांधी किसान न्याय योजना में मिलने वाली इनपुट सब्सिडी सहित किसानों को धान की कीमत 3200 रुपए क्विंटल मिलेगी। वहीं, कांग्रेस पहले 15 क्विंटल धान प्रति एकड़ खरीदती थी। अब प्रति एकड़ 20 क्विंटल खरीदेगी। इसके साथ ही 200 यूनिट तक बिजली लोगों को फ्री में दी जाएगी। महतारी न्याय योजना के तहत महिलाओं को गैस सिलेंडर पर 500 रुपए की सब्सिडी दी जाएगी। यह सीधे महिलाओं के बैंक खाते में जाएगी। साथ ही तेंदूपता संग्राहकों को प्रति मानक बोरा 4000 रुपए की जगह 6000 रुपए मिलेंगे। साथ ही चार हजार रुपए बोनस हर साल मिलेंगे।

कांग्रेस छत्तीसगढ़ में 10 लाख रुपए तक मुफ्त इलाज देने का वादा किया है। इसके साथ ही सभी सरकारी स्कूल स्वामी आत्मानंद स्कूल बनेंगे। सड़क हादसे के शिकार लोगों का मुफ्त इलाज होगा। स्व सहायता समूह का भी कर्ज माफ होगा। तिवरा भी समर्थन मूल्य पर खरीदा जाएगा। कांग्रेस की सरकार जातिगत जनगणना कराएगी। परिवहन व्यवसायियों के कर्ज भी माफ किए जाएंगे। युवाओं को उद्योग लगाने पर सरकार 50 फीसदी सब्सिडी देगी। दाह संस्कार के लिए लकड़ी का प्रबंध फ्री में किया जाएगा।

कांग्रेस के घोषणा पत्र के बड़े वादे

कांग्रेस का घोषणा पत्र-

किसानों का कर्ज माफी

₹3200 प्रति क्विंटल में धान खरीदी, 20 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीदी

200 यूनिट बिजली फ्री

सभी सरकारी स्कूल कॉलेज में KG लेकर PG तक मुक्त शिक्षा

तेंदूपत्ता का प्रति बोरा ₹600 और ₹400 सालाना बोनस भी

भूमिहीनों को मिलेंगे ₹10000 प्रतिवर्ष

गैस सिलेंडर पर ₹500 की सब्सिडी

साढ़े 17.5 लाख गरीब परिवार को आवास

लघु वनोपज की MSP पर मिलेंगे अतिरिक्त ₹10 प्रति किलो

अब 10 लाख रुपए तक मुफ्त इलाज

दुर्घटनाओं पर मुफ्त इलाज

तिवरा भी समर्थन मूल्य पर खरीदा जाएगा

परिवहन व्यववसायी के होंगे कर और कर्ज माफ

700 रीपा का होगा निर्माण

अब सभी सरकारी स्कूल बनेंगे स्वामी आत्मानंद स्कूल

स्व सहायता समूह का भी होगा कर्ज माफ

जातिगत जनगणना कराई जाएगी युवाओं को उद्योग वेबसाइट में 50% सब्सिडी

अंत्योष्टि के लिए लकड़ी का प्रबंध

सीएम बघेल ने राजनांदगांव में जारी किया घोषणा पत्र

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने राजनांदगांव में विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस का घोषणापत्र जारी किया। इसे भरोसे का घोषणापत्र नाम दिया गया है। राज्य में पहले चरण के लिए सात नवंबर को वोट डाले जाएंगे। यहां दो चरणों में मतदान होगा। जिसमें दूसरे चरण का मतदान 17 नवंबर को होगा।

रायपुर में कांग्रेस प्रभारी कुमारी शैलजा ने जारी किया घोषणा पत्र

छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रभारी कुमारी शैलजा ने आज रविवार को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन में कांग्रेस का भरोसे का घोषणा पत्र जारी किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि जुमलेबाजी का शब्द जुड़ता है तो वह बीजेपी के साथ जुड़ता है।

PARIVAHAN VISHESH NEWS
परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
24 घण्टे रहेगा उपलब्ध
1. वेब पोर्टल
2. फेसबुक
3. ट्विटर
4. लिंकडिन
5. इंस्टाग्राम
6. यूट्यूब चैनल
पर आप सभी के लिए 24 घण्टे रहेगा उपलब्ध
https://www.newsparivahan.com/
संपादक/ पब्लिशर
परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

धान खरीदी में भारी भ्रष्टाचार, बेईमान व्यापारियों के साथ सरकार का संत घात:कोंग्रेस नेता नरसिंह मिश्रा

मनोरंजन सासमल, ओड़िशा

भुबानेश्वर : कांग्रेस विधायक नरसिंह मिश्रा ने अनाज खरीद में भ्रष्टाचार को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधा है. विधायक ने कहा कि अनाज खरीद में बड़ा भ्रष्टाचार है और सरकार बेईमान व्यापारियों से मिली हुई है । राज्य में अनाज खरीद की स्थिति को लेकर स्टैंड कमेटी की बैठक में चिंता जतायी गयी है । समिति के अध्यक्ष नरसिंह मिश्र की अध्यक्षता में हुई बैठक में अनाज खरीद के मुद्दे पर गहन चर्चा हुई. स्थिति को लेकर बैठक में विधायक नरसिंह मिश्र विभाग के अधिकारियों पर जमकर बरसे. विधायक ने कहा कि राज्य में अनाज खरीद में बड़ा भ्रष्टाचार है.सरकार बेईमान व्यापारियों से मिली हुई है.बैठक के बाद प्रतिक्रिया देते हुए समिति के अध्यक्ष नरसिंह मिश्रा ने कहा कि राज्य में धान खरीद में भ्रष्टाचार हो रहा है. बहुत बड़ा भ्रष्टाचार है. हजारों करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार है. हर दिन हम छोटी बिक्री के बारे में सुनते हैं। किसान जो पैदा कर रहे हैं उसका दाम नहीं मिल रहा है। किसान उचित मूल्य पाने से वंचित हैं। केंद्रीय कानून है, अगर किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य पर नहीं बेच सकता तो एफसीआई उसकी उपज, खासकर धान खरीदेगी।

उन्होंने आगे कहा कि समिति ने कहा कि किसानों का धान सरकार खरीदेगी. वे किसानों को बेईमान व्यापारियों को अनाज बेचने के लिए मजबूर कर रहे हैं। सरकार बेईमान व्यापारियों से निपट रही है। इस शब्द का प्रयोग उच्च न्यायालय द्वारा किया गया था। हमने इसे रोकने की सलाह दी. कमेटी ने सभी मंडियों में सीसी टीवी लगाने को कहा था, लेकिन सरकार ऐसा

नहीं कर रही है। आधा अटका, आधा नहीं फंसा. इसे जहां लगाया गया था वहां से हटा दिया गया है. समिति ने जिले के भ्रमण के दौरान यह देखा है. जितना खरीदने का दाम उतना नहीं खरीदता. केएमटी द्वारा आज विभाग को निलंबित कर दिया गया है। किसान का शोषण मत करो. तदनुसार भुगतान करें।

बलांगीर और क्योंझर के आनंदपुर सहकारी बैंक में भ्रष्टाचार है। इसका फाइल विभाग के मंत्री ने दावा किया है. क्योंकि उनकी पार्टी के नेता इसमें शामिल हैं. मुख्यमंत्री भ्रष्ट न होने की कसम खाते हैं, लेकिन उनका कार्यालय भ्रष्टाचार की इजाजत देता है। सचिव बाजार में घूमें और चोरों को पकड़ें तो हम स्वागत करेंगे। लेकिन जहां चोर पकड़ा जाता है, उसे यूं ही बाहर फेंक दिया जाता है. उनके खिलाफ कोई मामला दर्ज नहीं किया जा रहा है. गिरफ्तार नहीं किया जा रहा है. कितने लोगों को जेल भेजा गया, राज्य सरकार को जानकारी देनी चाहिए. हमें उम्मीद है कि सचिव अपने जिले के दौरे के दौरान उन चोरों को पकड़कर जेल भेजेंगे।"

दिवाली पर प्रदेशभर से दिल्ली के लिए चलेंगी 53 अतिरिक्त बस

देहरादून। दीपावली त्योहार पर दिल्ली से आने-जाने वाली यात्रियों की भीड़ को देखते हुए निगम ने 53 अतिरिक्त बसें चलाने का निर्णय लिया है। इन बसों का संचालन पांच से 15 नवंबर और 22 से 28 नवंबर के बीच किया जाएगा। दीपावली त्योहार पर दिल्ली से आने-जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए प्रदेशभर से 53 अतिरिक्त चलाई जाएंगी। उत्तराखंड परिवहन निगम महाप्रबंधक संचालन दीपक जैन ने इस संबंध में आदेश जारी किए हैं। प्रदेश के ग्रामीण, पर्वतीय, हरिद्वार, कोटद्वार, ऋषिकेश, रुड़की, श्रीनगर, अल्मोड़ा, बागेश्वर, भवाली, हल्द्वानी, काशीपुर, काठगोदाम, रामनगर, रानीखेत, रुद्रपुर, लोहाघाट, पिथौरागढ़, टनकपुर डिपो से दिल्ली के लिए वर्तमान में 416 बसें चलती है। दीपावली त्योहार पर दिल्ली से आने-जाने वाली यात्रियों की भीड़ को देखते हुए निगम ने 53 अतिरिक्त बसें चलाने का निर्णय लिया है।

इन बसों का संचालन पांच से 15 नवंबर और 22 से 28 नवंबर के बीच किया जाएगा। महाप्रबंधक ने सभी मंडलीय और डिपो अधिकारियों को निर्देश दिए कि नवंबर माह में त्योहारों को देखते हुए अपने-अपने तैनाती स्थान पर अधिक समय दें। डिपो के अधीन संचालित किसी भी बस सेवा को स्थगित न होने दें। इसके साथ ही सीनियर फोरमैन, जूनियर फोरमैन, वरिष्ठ व कनिष्ठ केंद्र प्रभारी, लिपिकों की शत प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित की जाए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। Title Code : DELHIN28985. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023